एन.सी.बी. दर्पण

(वार्षिक पत्रिका)
वर्ष - 2021
अंक - 2

NATIONAL COUNCIL FOR CEMENT AND BUILDING MATERIALS

NCB

न हि ज्ञानेन सदृशं

राष्ट्रीय सीमेंट एवं भवन सामग्री परिषद्

एन सी बी हिंदी कार्यान्वयन समिति

महानिदेशक : डॉ बीबेकानंद महापात्र

इकाई प्रभारी : श्री आशुतोष सक्सेना

अध्यक्ष हिन्दी समिति : श्री अभिषेक अग्निहोत्री

हिन्दी अधिकारी : श्रीमती पूनम कनौजिया

सदस्य :

1. श्रीमती रश्मि गुप्ता

2. श्रीमती रुबी मलिक

3. श्री कपिल इष्टवाल

4. कुमारी चारु बजाज

संपादक मंडल :
श्री अभिषेक अग्निहोत्री
श्रीमती पूनम कनौजिया
श्रीमती रश्मि गुप्ता
श्रीमती रुबी मलिक

हिंदी राष्ट्रभाषा है, इसलिये प्रत्येक व्यक्ति को,
प्रत्येक भारतवासी को इसे सीखना चाहिए–
रविशंकर शुक्ल

बनावट एंव साज–सज्जा :
श्री अभिषेक अग्निहोत्री
श्री देवेन्द्र बघेल

महानिदेशक
राष्ट्रीय सीमेंट एवं भवन सामग्री परिषद्

सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि एन. सी. बी. राजभाषा कार्यान्वयन समिति अपने द्वितीय अंक का प्रकाशन करने जा रही है। भाषा विचारों के आदान प्रदान का सशक्त माध्यम हैं भाषा का प्रादुर्भात और विकास मनुष्य के विकास के साथ आगे बडा, स्वतंत्रता की अलख जगाने से लेकर देश की आजादी मे हिंदी का योगदान रहा हैं परन्तु समय के साथ–साथ हिंदी का उपयोग कम हो रहा हैं अब हम सबकी जिम्मेदारी है कि हम हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार के लिए अधिक से अधिक कार्य करें। राजभाषा हिंदी संस्कृतिक विभिन्नता में एकता का प्रतीक है। हिंदी विभिन्न भाषा भाषियों तथा संस्कृतियों के बीच सेतु का कार्य करती है। राजभाषा हिंदी संस्कृतिक और सामाजिक परंपरा की छवि है। और विचारों व भावों की अभिव्यक्ति में पूर्ण सक्षम भी है।

हिंदी भाषा विश्व की तीसरी और भारत में यह सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है किसी भी भाषा को राष्ट्रभाषा बनने के लिए उसमें सर्वव्यापकता, प्रचुर साहित्य रचना, बनावट की दृष्टि से सरलता और वैज्ञानिकता सब प्रकार के भाव को प्रकट करने का सामर्थ्य आदि गुण होने अनिवार्य है, यह सभी गुण हिंदी भाषा में है। अगर हिंदी का विकास करना है तो लोगों को दूसरी भाषाओं को छोड़कर अपनी देश की राजभाषा को स्वीकार करना पड़ेगा। जिस तरह हम अपने तिरंगे का सम्मान करते हैं उसी प्रकार अपने देश की राजभाषा को भी सम्मान देना चाहिए। एन. सी. बी. राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा वर्ष भर हिंदी के प्रचार–प्रसार हेतु विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये। हिंदी प्रतियोगिताएँ, हिंदी कार्यशालाओं और विचार – संगोष्ठियों का आयोजन करके राजभाषा के प्रचार–प्रसार को बढ़ावा दिया जा रहा है।

एन. सी. बी. हिंदी कार्यान्वयन समिति कार्यालय में हिंदी के प्रचार प्रसार के लिये पूरी सत्य निष्ठा से प्रयासरत है। मेरा प्रयास है कि कार्यालय में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग हो सके। मेरा हिंदी राजभाषा समिति के सभी सदस्यों से आग्रह है कि हिंदी का निरंतर प्रयोग बढाने में अपना पूर्ण योगदान दें।

मैं एन. सी. बी. दर्पण के द्वितीय अंक के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाऐं देता हूँ तथा मैं विश्वास दिलाता हूँ कि हमारा कार्यालय हिंदी में अधिक से अधिक कार्य के लिए प्रतिबद्ध हैं । मुझे विश्वास हैं कि एन. सी. बी. दर्पण में प्रकाशित सभी रचनाएं पाठको के लिए ज्ञानवर्धक तथा रचनात्मक भाव सृजन करने में सफल होगी ।

पत्रिका के सम्पादक मण्डल, रचनाकारों तथा प्रकाशन से जुडे सभी अधिकारियों, कर्मचारियों के सफल प्रयासो के लिए हार्दिक शुभकामनाऐं।

शुभकामनाओं सहित

डॉ बीबेकानंद महापात्र

राष्ट्रीय सीमेंट एवं भवन सामग्री परिषद्

संपादकीय

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का हिंदी के प्रति प्यार जग जाहिर है, उनके शब्दों में ह्दय की कोई भाषा नही है, हिंदी ह्दय की भाषा है।

हिंदी ऐसी भाषा है जो प्रत्येक भारतीय को वैश्विक स्तर पर सम्मान दिलाती है। दुनिया भर में आज करीब 75 करोड़ लोग हिंदी बोलते है जिस तरह से विश्व परिदृश्य में हिंदी की स्वीकार्यता बढ़ रही है उसे देखते हुए यह कहना असंगत नहीं लगेगा की अब वह दिन ज्यादा दूर नही है जब हमारी राजभाषा हिंदी, चीन की राजभाषा चीनी को पछाड़कर शीर्ष स्तर पर पहुँच जाये।

भाषा के विकास के लिये उसमें ग्रहणशीलता का होना आवश्यक है, इतिहास के धात प्रतिधात और विदेशियों के आगमन के बावजूद भी हमारी भाषा समृद्ध भी हुई है, शब्द भण्डार भी बढ़ा है।

हमारी हिंदी भाषा और साहित्य का स्वर्णकाल अभी आने वाला है, अचलों से लेकर देश, देशांतरो तक फैल रही हिंदी अब भी पनपनी, बढ़नी शेष है, इंटरनेट और मल्टीमीडिया से जो अपार अनंत संभावनाएं इधर के वर्षो में खुली है उनका प्रवेश हिंदी में अभी ही शुरू हुआ है।

हिंदुस्तान की एकता के लिये हिंदी भाषा जन– जन को जोडने का काम कर रही है, इसलिए हम सब को अपनी पूर्ण इच्छाशक्ति और दृढ संकल्पता के साथ हिन्दी के विकास को निरंतर आगे बढाना है ।

अभिषेक अग्निहोत्री
अध्यक्ष
एन. सी. बी.
राजभाषा कार्यान्वयन समिति

हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है: कमलापति त्रिपाठी

अनुक्रमणिका

क्र.स.		लेखक	पेज सं.
	प्रस्तावना		
1.	एनसीबी का परिचय		1
2.	हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन		3
3.	प्रतियोगिताओं के विजेता		4
4.	हिंदी में पत्राचार की स्थिति		5
5	वार्षिक गतिविधियाँ		6
	कविताऐं		
6	घर	डॉ शांति स्वरूप गुप्ता	9
7	जिन्हें था रोकना चोरी	डॉ हिमांशु शेखर	10
8	अभिमान	हार्दिक जैन	11
9	समर्पण	हार्दिक जैन	11
10	जिंदगी का खेत	हार्दिक जैन	11
11	पूर्ण वेग	प्रवीन राठी	12
12	अहसास करो कि तुम जिंदा हो	रूबी मलिक	12
13	सृजन के बीज	लक्ष्मण सिंह बिष्ट 'पहाड़ी'	13
14	सतत् यात्रा	लक्ष्मण सिंह बिष्ट 'पहाड़ी'	13
15	बसंती खुशबुओं के पखेरू	लक्ष्मण सिंह बिष्ट 'पहाड़ी'	14
16	मुक्ति दाता	लक्ष्मण सिंह बिष्ट 'पहाड़ी'	14
17	कविता से पहले	निर्मला शर्मा	15
18	सुनो साथियों	आस्था सिंह	15
19	हिन्दुस्तानी अंग्रेज	भारत	16
20	फुरसत	रजत कुमार घोष	16
21	धन्यवाद कोरोना तुम्हारा	कपिल कुकरेजा	17
22	दास्तान–एं–कोविड़	अंकुर मित्तल	18
	कहानियाँ		
23	बदलती सोच	नीरा वार्ष्णेय	19
24	चमकीला पत्थर	नीरज कौशिक	21
25	स्वर्ग यहां और नरक भी यहां	जितेन्द्र प्रसाद गोस्वामी	22
26	एक भयानक रात (आपबीती)	कपिल इष्टवाल	24
27	मेरे जीवन की प्रेरणादायक कहानी	कपिल इष्टवाल	26
28	लॉक डाउन का सकारात्मक पक्ष	प्रीशा गोस्वामी	28
29	एक भारत श्रेष्ठ भारत	सुनीता	29
	रचनाऐं		
30	जीवन के कड़वे सच	मो. एम. जमाली	33
31	शिक्षा का महत्व	चारु बजाज	35
32	लॉकडाउन और प्रौद्योगिकी (तकनीकी)	रूबी मलिक	36
33	विश्व भाषा हिंदी : स्वरूप और सामर्थ्य	डॉ. राजबीर सिंह	38
34	देश की सुरक्षा के लिए भू भाग चित्रण के आयाम	डॉ. हिमांशु शेखर,	45

माननीय श्री सोम प्रकाश जी, राज्यमंत्री वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार के कर कमलों द्वारा 15 जनवरी 2020 को एनसीबी की हिन्दी पत्रिका "एनसीबी दर्पण" के प्रथम अंक का विमोचन किया गया।

माननीय श्री सोम प्रकाश जी, राज्यमंत्री वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार के कर कमलों द्वारा 15 जनवरी 2020 को हिन्दी पखवाड़ा के विजेताओं को सम्मानित किया गया।

एन. सी. बी. का परिचय

सीमेंट और निर्माण सामग्री के व्यापार और उद्योग से जुड़े अनुसंधान और वैज्ञानिक कार्यों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से राष्ट्रीय सीमेंट एवं भवन सामग्री परिषद् (एनसीबी), (सीमेंट अनुसंधान संस्थान, सीआरआई) की स्थापना 24 दिसंबर 1962 को की गई थी।

आज, एनसीबी प्रौद्योगिकी विकास, स्थानांतरण, सतत शिक्षा और सीमेंट और निर्माण उद्योगों एंव औद्योगिक सेवाओं के लिए भारत सरकार के वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में प्रमुख संस्था है। सरकार सीमेंट उद्योग की वृद्धि और विकास से संबंधित गतिविधियों में, अपनी नीति और योजना के निर्माण के लिए आवश्यक सहायता प्रदान करने के लिए एनसीबी. नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करता है। यह देश में सीमेंट और कंक्रीट के उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा के लिए समर्पित है। एनसीबी के हितधारक सरकार, उद्योग और समाज हैं, जो राष्ट्रीय जिम्मेदारी का निर्वहन करने, क्रमशः पर्याप्त तकनीकी सहायता प्रदान करने और जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने में एनसीबी की भूमिका को समझते हैं।

भौगोलिक रूप से, एनसीबी का अपना प्रमुख केंद्र और मुख्य प्रयोगशालाएँ बल्लभगढ़ (नई दिल्ली के पास) में स्थित हैं; अन्य स्थापित क्षेत्रीय इकाईयाँ, हैदराबाद, अहमदाबाद (गुजरात) और भुवनेश्वर (ओडिशा) में है। एनसीबी की बल्लभगढ़, हैदराबाद और अहमदाबाद की इकाइयाँ आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित हैं।

सीमेंट निर्माण और उपयोग में एनसीबी के निम्मलिखित कार्य क्षेत्र हैं – प्रक्रियाओं, मशीनरी, विनिर्माण पहलुओं, ऊर्जा और पर्यावरण संबंधी कारणों के माध्यम से वास्तविक निर्माण, सामग्री की निगरानी में अंतिम उपयोग के लिए कच्चे माल की भूवैज्ञानिक अन्वेषण के साथ शुरू और इमारतों और संरचनाओं का पुनर्वास। एनसीबी आईएसओ 17025 मान्यता प्राप्त परीक्षण और अंशांकन सेवाएं, आईएसओ 17043 मान्यता प्राप्त प्रवीणता परीक्षण (पीटी) सेवाएं और आईएसओ 17020 मान्यता प्राप्त निरीक्षण सेवाएं प्रदान करता है। यह प्रमाणित संदर्भ सामग्री (सीआरएम) सीमेंट और निर्माण क्षेत्र को विकसित और आपूर्ति करता है। मानव संसाधन विकास के लिए, अल्पावधि और दीर्घकालिक पाठ्यक्रमों के माध्यम से सीमेंट, कंक्रीट, और निर्माण सामग्री क्षेत्र में प्रशिक्षण सेवाएँ प्रदान करता है। सीमेंट प्रौद्योगिकी में पीजी डिप्लोमा पाठ्यक्रम एआईसीटीई द्वारा मान्यता प्राप्त है। एनसीबी औद्योगिक सूचना सेवाओं के क्षेत्र में, सीमेंट, कंक्रीट और निर्माण सामग्री पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित करता है। अब तक इस सेमिनार के 16 संस्करण आयोजित किए हैं। ये सभी गतिविधियाँ छह केंद्रो द्वारा संचालित होती हैं:

- **सीमेंट अनुसंधान एवं स्वतंत्र परीक्षण केन्द्र (सीआरटी)**– सीमेंट और अन्य बाइंडरों, अपशिष्ट उपयोग, दुर्दम्य और सिरामिक, मौलिक और बुनियादी अनुसंधान के क्षेत्र में अनुसंधान गतिविधि के लिए केंद्र जिम्मेदार है। केंद्र सीमेंट और सीमेंट सामग्री और अन्य निर्माण सामग्री की परीक्षण गतिविधियों को भी देखता है।

- **खनन, पर्यावरण, संयंत्र इंजीनियरिंग एवं संचालन केंद्र (सीएमई)**– भूविज्ञान, खनन और कच्चे माल, पर्यावरण प्रबंधन, प्रक्रिया उपयोग और उत्पादकता, ऊर्जा प्रबंधन, संयंत्र रखरखाव और परियोजना इंजीनियरिंग और सिस्टम डिजाइनिंग के क्षेत्र में केंद्र अपनी गतिविधि करता है।

- **निर्माण विकास एवं अनुसंधान केंद्र (सीडीआर)**– संरचनात्मक मूल्यांकन और पुनर्वास, कंक्रीट प्रौद्योगिकी, निर्माण प्रौद्योगिकी और प्रबंधन और संरचनात्मक अनुकूलन और डिजाइन के क्षेत्र में अनुसंधान गतिविधियों के लिए केंद्र जिम्मेदार है।

- **गुणवत्ता प्रबंधन, मानक एवं अंशांकन सेवा केंद्र (सीक्यूसी)**– प्रवीणता परीक्षण, मानकों संदर्भ सामग्री, अंशांकन सेवाओं और कुल गुणवत्ता प्रबंधन के क्षेत्र में केंद्र उद्योग को सेवाएं प्रदान करता है।

- **औद्योगिक सूचना सेवा केंद्र (सीआईएस)**– सीआईएस आईटी इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रदान करता है। एनसीबी के प्रकाशनों, सेमिनारों और सम्मेलनों, अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय संपर्क और छवि निर्माण का काम भी केंद्र देखता है।

- **सतत् शिक्षा सेवा केंद्र (सीसीई)**– सीमेंट, कंक्रीट और निर्माण के क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की आवश्यकता आधार, उद्योग–उन्मुख प्रशिक्षण कार्यक्रम केंद्र आयोजित करता है।

  उपरोक्त छह सामाजिक केंद्रों की तकनीकी गतिविधियों का समर्थन करने के लिए एनसीबी के पास निम्नलिखित चार सेवा समूह हैं।

- **वित्त एवं लेखा (एफएएस)** – दिन–प्रतिदिन की वित्तीय गतिविधियों के प्रबंधन के लिए एफएएस जिम्मेदार है

- **मानव संसाधन एवं प्रशासनिक सेवा (एचआरएस)** – एचआरएस–जीईएन परिवहन के बुनियादी ढांचे और एचआरएस–पीईआर मानव संसाधन गतिविधि जैसे कि भर्ती, पदोन्नति, मूल्यांकन आदि प्रदान करता है।

- **संपति प्रबंधन एवं तकनीकी सेवा (ईटीएस)** – ईटीएस द्वारा कार्यक्षेत्र, उपयोगिताओं, उपकरण और संचार प्रौद्योगिकी अवसंरचना जैसे संसाधनों सहित बुनियादी ढांचे को बनाए रखा जाता है।

- **सामग्री प्रबंधन सेवा (एमएमएस)** – एमएमएस संगठन के विभिन्न विभागों की आवश्यकताओं के अनुसार कच्चे माल सहित उपकरणों की खरीद के लिए जिम्मेदार है।

हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया। राजेंद्रप्रसाद

हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन

संस्थान में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन 14 सितंबर से 28 सितंबर 2020 के बीच बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। हिन्दी पखवाड़े का शुभारंभ 14 सितंबर 2020 को डॉ बीबेकानंद महापात्र, महानिदेशक द्वारा किया गया। पखवाड़े का शुभारंभ करते हुये महानिदेशक ने सभी सदस्यों से अनुरोध किया की संस्थान में सभी सदस्यों को राष्ट्र भाषा के प्रचार प्रसार के लिये निरंतर प्रयास करते रहना चाहिये तथा अधिक से अधिक कार्य हिन्दी भाषा में करना चाहिये और राष्ट्र भाषा में कार्य करते समय हमें गौरान्वित महसूस करना चाहिये।

संस्थान में हिन्दी पखवाड़ा 2020 के दौरान संस्थान में निम्नलिखित प्रतियोगितायें आयोजित की गईः

- टिप्पणी लेखन प्रतियोगिता,
- निबंध लेखन प्रतियोगिता,
- श्रुतलेखन प्रतियोगिता
- कविता / स्वविचार प्रतियोगिता

संस्थान में हिन्दी पखवाडा 2020 का सुभारंभ एंव प्रतियोगिताओं का आयोजन

इस अवसर पर अध्यक्ष श्री अभिषेक अग्निहोत्री ने सभी प्रतिभागियों को प्रतियोगिताओं पर भाग लेने के लिए धन्यवाद दिया तथा भविष्य में नराकास तथा मंत्रालय के अंतरगर्त होने वाली सभी प्रतियोगितायों में अधिक से अधिक संख्या मे भाग लेने के लिए सभी से आह्वान किया। महानिदेशक डॉ बीबेकानंद महापात्र ने संस्थान में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करने के लिए हिन्दी समिति को दिशा निर्देश दिये।

जिस देश को अपनी भाषा और अपने साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता – देशरत्न डॉ. राजेन्द्रप्रसाद

प्रतियोगिताओं के विजेता

हिंदी पखवाड़े में आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेता

निबंध लेखन प्रतियोगिता

श्रीमती रुबी मलिक – प्रथम

मो. मुशताक जमाली – द्वितीय

श्रीमती सुरुचि – द्वितीय

श्रुतलेखन प्रतियोगिता

श्री गौरव भटनागर– प्रथम

श्री अंकुर अवस्थी – द्वितीय

टिप्पणी लेखन प्रतियोगिता

श्री हार्दिक जैन – प्रथम

कुमारी चारु बजाज – द्वितीय

कविता / स्वविचार प्रतियोगिता

श्री हार्दिक जैन – प्रथम

श्री कपिल कुकरेजा –द्वितीय

संस्कृत के अपरिमित कोश से हिन्दी शब्दों की सब कठिनाइयाँ सरलता से हल कर लेगी –
राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन

हिंदी पत्राचार की स्थिति

हिन्दी भाषा अधिनियम के तहत 'क', 'ख', 'ग' क्षेत्र में पत्राचार का वस्तुस्थिति भारत सरकार ने कार्यालयों को क्षेत्रीय स्तर पर 'क', 'ख' और 'ग' में बाँटा है और उसके लिये सभी कार्यालय के पत्राचार हेतु लक्ष्य निर्धारित किये गये है। एन.सी. बी. ने पिछली तीन तिमाही के विभिन्न क्षेत्रो में निर्धारित लक्ष्य को बहुत ही उत्साहपूर्ण परिणाम प्राप्त किये है जिनका विवरण नीचे दिया जा रहा है

'क' क्षेत्र में पत्राचार की स्थिति 2020

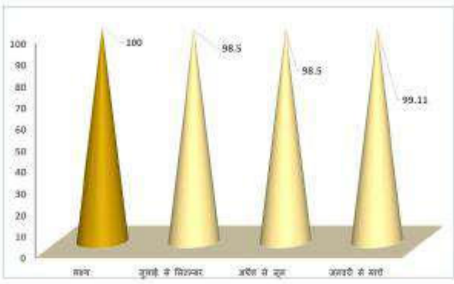

'ख' क्षेत्र में पत्राचार की स्थिति 2020

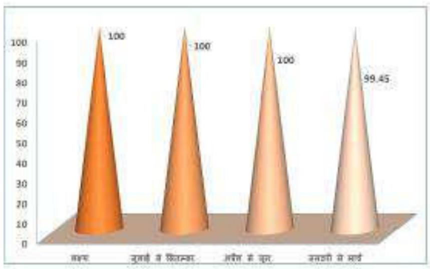

'ग' क्षेत्र में पत्राचार की स्थिति 2020

वर्ष 2020 में फाइलों/दस्तावेजों पर लिखी गई टिप्पणियों की स्थिति

हिंदी समस्त आर्यावर्त की भाषा है–शारदाचरण मित्र

वार्षिक गतिविधियाँ

57 वां एनसीबी दिवस समारोह

एनसीबी बल्लभगढ़ में माननीय मंत्री का आगमन

दीप जलाकर एनसीबी दिवस का उद्घाटन

माननीय मंत्री द्वारा एनसीसीबीएम न्यूज़लैटर विमोचन - "16 वां एनसीबी अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी विशेषांक"

सतर्कता जागरुकता सप्ताह

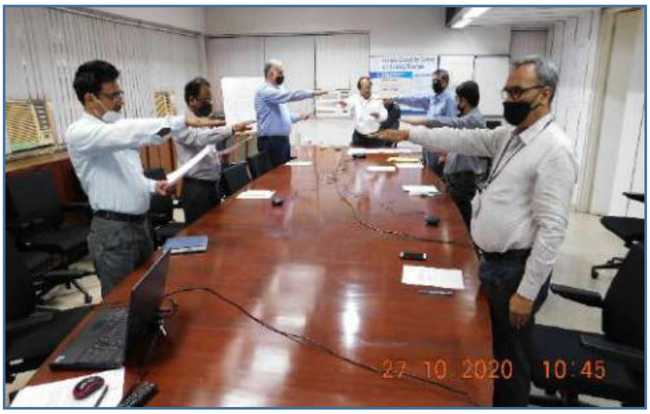

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

Vigilance Awareness Week

"Satark Bharat, Samriddh Bharat (Vigilant India, Prosperous India)"

27th October to 2nd November 2020

National Council for Cement and Building Materials
Ballabgarh

स्वतंत्रता दिवस

राष्ट्रीय एकता दिवस

संविधान दिवस

गणत्रंत दिवस

स्वच्छता दिवस

कोविड –19 जन आन्दोलन

डॉ शांति स्वरूप गुप्ता
वरिष्ठ विकास अधिकारी, *DPIIT*

घर

घर चलो हम अपना सुनहरा कल बनाएं,
चलो घर बनाएं, चलो घर सवारें
न है कोई चाहत, न है कोई आरज़ू,
अगर मैं मुस्कराउं तो तुम भी मुस्करा दो।

चलो हम अपना सुनहरा कल बनाएं
न मैं तुम्हें परखूं न तुम मुझे परखो,
बस मैं तुम्हें स्वीकार लूं और तुम मुझे स्वीकार लो।

चलो हम अपना सुनहरा कल बनाएं
न रहे कोई गिला न रहे कोई शिकवा,
बस तुम मुझे अपना लो और मैं तुम्हें अपना लूं।

चलो हम अपना सुनहरा कल बनाएं
चलो घर बनाएं, चलो घर सवारें।

हिंदी के ऊपर आघात पहुँचाना
हमारे प्राणधर्म पर आघात पहुँचाना है –
जगन्नाथ प्रसाद मिश्र

डॉ हिमांशु शेखर, वैज्ञानिक जी, निदेशक
(परियोजना अनुवीक्षण)
आयुध एवं समाघात अभियांत्रिकी महानिदेशालय,
(रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन)
डॉ होमी भाभा रोड, पाषाण, पुणे

जिन्हें था रोकना चोरी

जिन्हें था रोकना चोरी, वो खुद सरदार बन बैठे,।
वो सारी धांधली में खुद, अहम किरदार बन बैठे।

सारा खेल किस्मत का, अलग अंजाम लाया था,।
वो तख्तासीन थे पहले, मगर चोबदार बन बैठे।

बड़ी नफरत दिखाई थी, नाजायज सी आमद से,
अभी वो भ्रष्ट बन इसके, ही ताबेदार बन बैठे।

उन्हें हैं माफ भ्रष्टाचार, क्योंकि कुर्सी उनकी है,।
फकत दूजों की करतूतों के, पहरेदार बन बैठे।

उन्होंने बेच दी खुद्दारी, अपना मोल जाहिर कर,
हरेक जमीर के वो आज, खरीदार बन बैठे।

चोरी में उन्हें शिखर, है हासिल वो खिताब आखिर,
कि बिना जमीन के वो आज, जमींदार बन बैठे।

भाषा विचार की पोशाक है–
डॉ. जानसन

हार्दिक जैन

अभिमान

धरती सूरज नदियाँ और नभ, इन पर कैसे अभिमान करूं
इनसे मैं हूँ, मुझसे ये नहीं, इनपर कैसे गुमान करूं

मेरी जननी मेरे सम्बल (पिता) जिनकी रही छत्रछाया है
कैसे पहचान बता दू उनको जिसने मुझे बनाया है

मेरे शिक्षक मार्ग प्रदर्शक जिनसे ज्ञान ये पाया है
कैसे राह बता दू उनको जिसने मार्ग दिखाया है

मेरे ईश्वर सर्वोपरि न नश्वर जिनका रखा संसार है
मैं क्या उनकी रक्षा करूं, मेरा जीवन पल चार है

मेरा खाना और पहनावा और जो मेरी जबान है
क्या गुणगान करूं मैं इनका यह ही मेरी पहचान है

मैंने चयन किया नहीं इनका विरासत में मिला मुझें दान है
समझ गया नादान था अब तक
सम्मान ही असल अभिमान है

जिंदगी का खेत

जिंदगी के खेत को वक्त से सींच दे
खाद दे उम्मीद के विश्वास के बीज दे
देह का हल दे पूरा अपना बल दे
आज दे और कल दे प्रयास पल पल दे
दर के कीट पे हौसलों को छींट दे
सन्नाटो की आवाजों में उमंगो के गीत दे
अनचाहे ये पौधें तू जड़ से उखाड़ दे
है भी क्या तेरा जो कोई कुछ बिगाड़ ले
सम्भावना का सूरज है विकल्पों की बारिश है
बादलो से क्या डरना जब आसमां की ख्वाईश है
श्रद्धा है सबुरी रख एक दिन आएगा
जिंदगी का खेत तेरा सुनहरी फसलों से लहराएगा

समर्पण

राम का त्याग और मीरा के भजन है समर्पण
बुद्ध की जिज्ञासा महावीर का तपन है समर्पण
माता पिता की आंखो में जो तू दिखे वो दर्पण है
समर्पण
कुछ न पाने की उम्मीद में बस दिए जाने का
जतन है समर्पण

समय सामर्थ्य और शक्ति का अजपन है समर्पण

अटल निश्चय, दृढ़ संकल्प, निश्चित कथन है
समर्पण
सांस, शरीर और आत्मा का एक गमन है
समर्पण

पल पल प्रेरणा प्रदत बुन लिया वो सपन है
समर्पण
कभी हार कभी जीत कभी बाधा तो कभी
उलझन है समर्पण
अडिग रहकर ध्येय पथ पर चलने की लगन है
समर्पण
निरंतर अच्छे की तलाश में बेहतर का सृजन है
समर्पण

बाहर की दुनिया में रहकर भीतर का दर्शन है
समर्पण
जो कुछ मुझें बन पड़े जो मेरे पास है सब अर्पण
है समर्पण

मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूं पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं सह नहीं सकता – आचार्य विनोबा भावे

प्रवीण राठी (रूबी मलिक)

पूर्ण वेग

सूरज का असीम तेज
जब धरा को रोज तपाता है
संचित विराट सागर जल को
वो भाप बना ले उड़ा जाता है।

क्या, इस पर कभी धरा को तूने
शोक मनाते देखा है ?
वृक्षों को इस पर,
क्या कभी छाया छुपाते देखा है ?

बस आगे बढ़ तू............पूर्ण वेग से
सब मंजिल मिल जाएगी
ये असफलता की तेज धूप
तेरा कुछ न कर पाएगी।

रूबी मलिक

अहसास करो कि तुम जिंदा हो

अहसास करो कि तुम जिंदा हो
कुछ हुआ है गलत,
तो लड़ो,
क्यों शर्मिंदा हो ?
अहसास करो कि तुम जिंदा हो

तुम्हें ही बनाने है, रास्ते अपने
तुम्हें ही करने है, साकार सपने अपने
तो उठो,
क्यों पाबंदा हो,
अहसास करो कि तुम जिंदा हो

सरहदें तोड़ दो, बंदिशों की
मुश्किले निचोड़ दो अगर मिले कोई
तो बढ़ो,
क्यों गमजदा हो,
अहसास करो कि तुम जिंदा हो।

जिस देश को
अपनी भाषा और साहित्य का
गौरव का अनुभव नहीं है,
वह उन्नत नहीं हो सकता–
डॉ. राजेंद्र प्रसाद

लक्ष्मण सिंह बिष्ट 'पहाड़ी'

सृजन के बीज

वृक्षों के घने साये
और इनसे से भी छनकर आती यह उजास
अदभुत है यह शक्ति
इस भव्य शून्य के पार
एक डोर है चेतना की
यू ही नहीं हुमकता कोई
मेरे भीतरी तहखानों में
न भूला है कभी आत्मसात करना
इन चकित विस्मित रचनाओं को देख
योनियां कितनी धारण करता आया है काल
उफनती ज्वालामुखियों के मुख
भस्म बनाते लावे तक में
फूटने लगते हैं अंकुर
क्या आंधियों के अंधड़ ज्वार
रोपना जानते हैं जीवन
नहीं।
जल–थल से परे बँटता है वहाँ
काल की चोटी पर बैठा महाकाल
इस चक्र का स्वामी
संभाले है बीज सृजन के
यूं ही फलती फूलती रहेगी सृष्टि
घोर तांडवों के बाद.........

हमारी नागरी लिपी
दुनिया की सबसे
वैज्ञानिक लिपी है–
राहुल सांकृत्यायन

सतत यात्रा

आकाश में चमकते तारे देखते हो
इन्हे देखो
सत्य की जमीन पर शून्य में
अपने वजूद पर खड़े हैं

धरती और नभ का फासला
पाट सकते हो अपने भावुक ख्यालों से
कर सकोगे एक सतत यात्रा इतनी सहज
सुनो।

घट के ब्रहमाण्ड में
ऐसे अनंत आकाश हैं
जिस उजास की दस्तक तुम्हारी आत्मा पर पड़ती
है

सुन सकोगे वो आवाज
खोल सकोगे वो द्वार

लक्ष्मण सिंह बिष्ट 'पहाड़ी'

बसंती खुशबुओं के पखेरू

पगडंडियाँ झीलें नदियां पहाड़
सब करते हैं उसका इंतजार
धूल मिट्टी पेड़ पौधें बेचैन हैं

जीव जन्तु अतृप्त
और प्यासी धरा
फिलहाल उमड़ते–घुमड़ते बादलों के साये
छाँव सी बनकर विलीन हो जाते हैं

नील गगन में
वो आयेगा
और दुर्गम घाटियो से लेकर
ऊंची चट्टानों तक
अपना साम्राज्य छोड़ जाएगा

बीहड़ उजाड़ तक को
दुल्हन–सा संवार जाएगा.....
प्रवासी परिंदे भी

इस खुशबु से लौट आएगें
अपने देश।
कितना मधुर मिलन होता है

हे ऋतुराज
बसंती झूमरों में झूमते ये पहाड़
बेगानी धरती पर कहीं

कुमन्हा न जाए मेरे मन के पखेरू
मैं भी आऊँगा। जरूर आऊँगा

मुक्ति दाता

वरदान तुम्हें किसने दिया
ऐ मेरे संगोतियों

महकती है धरा तुम्हीं से
जीवन यहाँ महकता है

पसरी हैं भुजाएं तुम्हारी निस्वार्थ चिरकाल से
कितना कुछ बांटने को है यहाँ

जीव निराश है फिर भी
छाँव तले तुम्हारी ही

ओ मेरे दानी पूर्वजों
दे सको तो अब हमें

मुक्ति दे देना.....

हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति
का सरलतम स्त्रोता है–सुमित्रानंदन पंत

निर्मला शर्मा

कविता से पहले

यह गलत है सोचना
कि कविता एक सिटिंग में होती है

कई बार एक कविता रचने के लिए
लग जाते हैं कई दिन
कई हफ्ते और महीने

कविता एक दिन कि चीज नहीं
महीने क्या साल भी कम हैं

कविता से पहले
कविता कि तैयारी में
एक कविता के लिए
लिख जाती हैं कई – कई रचनाएं

छप जाते हैं कभी – कभी
कई काव्य संकलन

फिर भी इंतजार रहता है
उस कविता का
जो अभी रचना बाकी है।

आस्था सिंह (अनुपम)

सुनो साथियों

सुनो साथियों
सुनो सुनो साथियों
ये मेरा राष्ट्रगान है
ये मेरा राष्ट्रगान है
तुम को दी पहचान है।
की सुरक्षा प्रदान है
दिया शिक्षा का दान है।
दिया अन्न और जीवन संग मान है।
ये मेरा भारत महान है।
ये मेरा राष्ट्रगान है।
ये मेरा राष्ट्रगान है ये मत भूलो
सरहद पर हर जवान देता अपनी जान है।
गाता फिर भी राष्ट्रगान है ।
ये मेरा हिन्दुस्तान है मेरा भारत महान है।
मेरा भारत महान है।
संसार में भारत का नाम, सम्मान है।
प्रेम और बलिदान है।
ये मेरा अभिमान है।
मेरी जान है।
मेरा देश महान है।
ये मेरा राष्ट्रगान है।
ये मेरा राष्ट्रगान है।
भारत माता की जय !!!

राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है– महात्मा गांधी

भारत (अनुपम)

हिन्दुस्तानी अंग्रेज

हिन्दी दिवस ये हर साल,
हम से एक ही प्रश्न उठाता है,
अपने ही देश में क्यूँ लाचार,
हमारी राष्ट्र–भाषा है।

ऊँचे पदों पे बैठ के हम
ग्यान की वाणी गाते हैं,
अपने बच्चों की जब बात चले
तो अंग्रेजी स्कूल ही भाते हैं।

यूँ तो पतिदेव हिन्दी–दिवस पर
हर साल ईनाम पाते हैं,
पर श्रीमती जी अंग्रेजी में बतियाती
तो फूले नहीं समाते हैं।

जापान की बोली जापानी,
रूस में चलती रूसी है,
चीनियों की भाषा चीनी,
क्यूँ हिन्द में छाई अंग्रेजी है।

माना २०० साल अंग्रेजों ने
जबरन गुलाम बनाया था,
पर इन ७० सालों में क्यूँ हिन्दी ने
सही औहदा नहीं पाया था।

सरकारों नेताओं को गाली,
देना बहुत आसान है,
जो अपने गिरेबान में झाँक सकें हम,
काम वही महान है।

आओ मिलकर हिन्दी को,
फिर वही मुकाम दिलाएंगे,
राष्ट्र हमारा था विश्व–गुरू,
फिर उसे वहीं ले जाएंगे।

रजत कुमार घोष

फुरसत

जिन्दगी से लम्हें चुरा, बटुए में रखता रहा,
फुरसत से खरचूंगा, बस यही सोचता रहा।

उधड़ती रही जेब, करता रहा तुरपाई,
फिसलती रही खुशियाँ, करता रहा भरपाई।

इक दिन फुरसत पायी, सोचा खुद को आज रिझाऊं,
बरसों से जो जोड़े, वो लम्हे खर्च आऊं।

खोला बटुआ लम्हे न थे, जाने कहाँ बीत गए,
मैंने तो खर्चे नहीं, जाने कैसे बीत गए।

फुरसत मिली थी, सोचा खुद से ही मिल आऊं,
आईने में देखा जो, पहचान ही न पाऊँ।

ध्यान से देखा, बालों पे चांदी सा चढ़ा था,
था तो मुझ जैसा, पर जाने कौन खड़ा था।

शिक्षा के प्रसार
के लिए नागरी लिपि
का सर्वत्र प्रचार
आवश्यक है–
शिवप्रसाद सितारेहिंद

धन्यवाद कोरोना तुम्हारा

कपिल कुकरेजा

फिजूल की भागदौड़ पर, इक लम्बा लगाम लगा दिया
धन्यवाद कोरोना तुम्हारा, इंसान को इंसान बना दिया

न मॉल, न सिनेमा और न बाहर का खाना
न छोटी–छोटी बातों पे, घर से बाहर जाना
घर को ही जन्नत सा, उद्यान बना दिया
धन्यवाद कोरोना तुम्हारा, इंसान को इंसान बना दिया

देख रहें हैं नीला आसमान, कितने वर्षों बाद
अनगिनत टिमटिमाते तारें, जाने कितने अरसों बाद
प्रकृति के दूत ने, हवा में घुलते जहर पर विराम लगा दिया
धन्यवाद कोरोना तुम्हारा, इंसान को इंसान बना दिया

कई सालों बाद घर में सब साथ हैं, और वक्त है
पहली बार पता चला की कानून व्यवस्था कितनी सख्त है
डॉक्टर, पुलिस और शिक्षक को, सही में भगवान् बना दिया
धन्यवाद कोरोना तुम्हारा, इंसान को इंसान बना दिया

जब घर से मैनेज होता है, तो ऑफिस क्यूँ जाते थे
व्यर्थ का ईंधन, बिजली और संसाधन खपाते थे
कई महीनो से खड़ी है जो पार्किंग में,
उसे फिजूल का वाहन बना दिया
धन्यवाद कोरोना तुम्हारा, इंसान को इंसान बना दिया

हे परम शक्ति कोरोना इतना काफी है
इंसान को इंसान बनाने के लिए
सहृदय विनती है तुमसे, अब वापस जाने के लिए
वादा करते हैं की आगे प्रकृति पर आंच नहीं आने देंगे
हवा की शुद्धता और पानी की पारदर्शिता को नहीं जाने देंगे
तुम्हारे इस सबक ने पूरी दुनिया में कोहराम मचा दिया
धन्यवाद कोरोना तुम्हारा, इंसान को इंसान बना दिया।

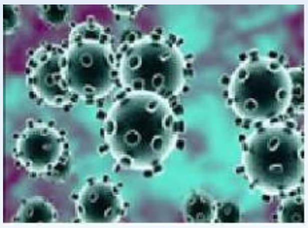

हिंदी और उर्दू एक ही भाषा के दो रूप हैं और दोनों रूपों में बहुत साहित्य है–
अंबिका प्रसाद वाजपेयी

अंकुर मितल

दास्तान–ए–कोविड़

विगत वर्ष में जीवन बदला हर मायने में
यकीन न हो तो आओ देखे समय के आईने में
कहते थे कि महानगरों में जिंदगी कभी रूकती नहीं
हैं कैसी ये कोरोनी की निशा आई जो चुकती ही नहीं
महामारी की दहशत में इंसान कैद हुआ चार दीवारों में
आयी समझ पीड़ा तब बेजुबानों की जो कैद हैं पिंजरों में
वक्त ने क्या सितम ढाया, घुली खामोशी फिजाओं में
प्रगति के सपने भी ढल गए घोर निराशाओं में
मास्क और दो गज की दूरी ने तो जैसे डरा ही दिया
चौपट हुए व्यापार ने अर्थव्यवस्था को चौंका ही दिया
इस लाचार परिस्थिति के लिए हैं ढेरों वेदनाएं और संवेदनाएं भी
पर इस महामारी ने जीवन के कुछ पाठ हैं सिखाएँ भी
इंसान जो सुलझा पाया है वह तो हैं प्रकृति रहस्य का आरंभ
इस अबूझ निर्जीव वाइरस ने मिटा दिया अधूरे ज्ञान' का दंभ
प्रकृति और समय आज भी हैं उतने ही बलवान
हैं मंजिलें कोसो दूर ये हुआ इंसान को ज्ञान
काम आया सादा जीवन, और उचित खान–पान का ज्ञान
पश्चिम जीवन शैली पर फिर भारी पड़ा प्राणायाम
गिर कर फिर संभला इंसान दिखाने को अपनी दृढ़ शक्ति
देखो कैसी वैज्ञानिकों ने बना दी वैक्सीन रूपी जीवन घुट्टी
हैं विश्वास कि इंसान समझेगा प्रकृति की ज्येष्टता को
और साबित करेगा 'अंकुर' फिर अपनी श्रेष्टता को।

राष्ट्रीय एकता के लिये हमें प्रांतीयता की भावना त्यागकर सभी प्रांतीय भाषाओं के लिए एक लिपि देवनागरी अपना लेनी चाहिये – शारदाचरण मित्र (जस्टिस)

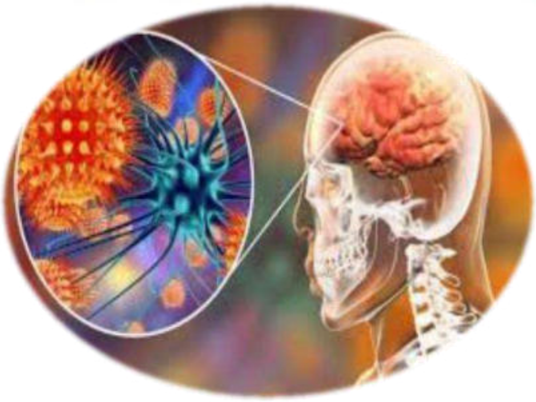

नीरा वार्ष्णेय "नीराम" (रश्मि गुप्ता)

बदलती सोच

रिया की आँख खुली तो उसने घड़ी पर नजर डाली, देखा शाम के पाँच बजने वाले है, वो जल्दी से उठी अपने खुले हुए बालों को लपेट कर छोटा सा जूड़ा बनाया। उसके पति अजय के आने का समय हो गया था। रिया ने सोचा चाय के साथ थोड़े से पकोड़ें भी तल लेती हूँ। अजय को पकोड़ें बहुत पसंद हैं। रिया ने पकोड़ें बनाने की पूरी तैयारी कर ली। डोर बेल बजने की आवाज सुनाई दी। रिया ने झट से दरवाजा खोला, सामने अजय ही था। पर आज अजय के चेहरे पर वो मुस्कान नहीं थी, जो रोज होती थी।

रिया ने पानी का ग्लास अजय को दिया, अजय ने पानी पी कर गिलास पास रखी मेज पर जोर से पटका, अजय का चेहरा गुस्से से लाल था। रिया ने अजय से पूछा "क्या हुआ?" अजय ने तमतमाते हुए कहा ये पापाजी को क्या हो गया है इस उम्र में भी कहते कहते रुक गया।
अजय ने फिर कहना शुरू किया "सारी कॉलोनी में उनके ही चर्चे हो रहे हैं, वो रमा आंटी के साथ पार्क में खूब हँस–हँस कर बात करते हैं, पापाजी ये सब करने ही पार्क में जाते हैं? आज तो हद ही हो गई –रमा आंटी अपने हाथ से पापाजी को खीर खिला रही थीं।

अजय की बात पर रिया मुस्करा दी पापाजी यानी रिया के ससुरजी जो एक जिंदादिल इंसान हैं, कॉलोनी में किसी को भी कोई मदद की जरूरत होती हैं, पापाजी उसकी मदद करने में सबसे आगे रहते है। रमा आंटी की भी एक बार मदद की थी। रिया ने अजय से कहा –"पापाजी आंटी से बात करते हैं, या मिलने जाते हैं, ये उनकी जिंदगी है, जैसे चाहें वैसे करें, तो इसमें गुस्सा करने की क्या बात है।"

"आज गुप्ता आंटी मुझ से भी यही बात कह रही थीं, मैंने तो उलटा उनको ही सुना दिया, क्या किसी से बात करना भी गुनाह है, पापाजी अगर रमा आंटी से बात करते भी हैं, तो इसमें गलत क्या है।" रमा आंटी ! "आप भी तो आज सुबह शर्मा अंकिल से हँस–हँस कर बात कर रही थीं, "इतना सुनते ही गुप्ता आंटी खिसिया कर बोली, "हमारा फर्ज था सो हमने बता दिया," कहते हुए वहाँ से खिसक ली।

अजय रिया की तरफ देखते हुए बोला "सुबह पता है पापाजी! कौन सा गाना सुन रहे थे, मेरे सपनो की रानी कब आएगी तू..... इस उम्र में क्या? ऐसे गाने सुने जाते।

रिया हँसते हुए बोली –"अरे पापाजी को किशोर दा के गाने अच्छे लगते हैं, इस लिए वो सुन रहे थे, किशोर दा के गाने हैं ही इतने अच्छे, कि पापाजी ही नहीं सभी को उनके गाए गाने अच्छे लगते हैं, और गाने सुनने का उम्र से क्या ताल्लुक है।" तुम भी ना अजय .... इतना कहते हुए, रिया चाय बनाने चली गई। रिया रात का सारा काम निबटा कर कमरे में गई तो उसने देखा, अजय अपने ऑफिस का काम कर रहे हैं। रिया ने हिम्मत कर के अजय से कहा "मुझें तुमसे कुछ कहना है, "अजय ने कोई जवाब नहीं दिया. अजय ने अपने ऑफिस का काम बंद कर दिया, और रिया की तरफ देखने लगा।

रिया ने अजय का हाथ अपने हाथ में लेकर कहना शुरू किया "अजय तुमको पता है ना, जब तुम बहुत छोटे थे, तभी तुम्हारी माँ तुमको छोड़ कर इस दुनिया से चली गई थीं। तुमको तुम्हारे पापाजी ने ही माँ और बाप दोनों का प्यार देकर बड़ा किया हैं, वो चाहते तो तभी अपनी दूसरी शादी कर सकते थे, पर तुम्हारे कारण ही नहीं की, जब तुम बड़े हुए तो तुमने और मैंने प्रेम विवाह किया, तब भी पापाजी ने तुम्हारी खुशी के लिए मुझ जैसी साधारण घर की लड़की को भी स्वीकार कर लिया था" आज अगर वो खुश हैं तो क्या?' अब भी उनको खुश रहने का अधिकार नहीं है, पापाजी को अगर रमा आंटी से बात कर के या उनसे मिल कर खुशी मिलती है, तो इसमें गलत क्या है? जमाना क्या कहता है, हमको उस से मतलब नहीं है, पापाजी को किस से खुशी मिलती है, हमको उससे मतलब होना चाहिए,

पापाजी तो रमा आंटी के घर जा कर भी मिल सकते हैं, पर वो ऐसा नहीं करते हैं, वो पार्क में ही सबके सामने मिलते हैं। "अजय जरा अपनी सोच बदल कर तो देखो! कितना सुकून मिलेगा तुमको" रिया अजय की आँखों में झाँकती हुई बोली। अजय ने कोई जवाब नहीं दिया। सब सो चुके थे, पर अजय की नींद अजय से कोसों दूर थी। अजय धीरे से उठा और दबे पाँव चलता हुआ दूसरे कमरे में अपनी माँ की तस्वीर के सामने खड़ा हो गया, फूलों के हार के पीछे से माँ का झाँकता हुआ चेहरा मुस्करा रहा था।

अजय ने धीरे से पापाजी का कमरा खोला, पापाजी के खर्राटे की आवाज और जोर से आने लगी, पापाजी गहरी नींद में सोए हुए थे। अजय ने दरवाजा धीरे से पहले की ही तरह भिड़ा दिया। अजय अपनी पलंग पर लेट गया और सोने की कोशिश करने लगा। अजय नाश्ता कर के ऑफिस जाने के लिए निकालने लगा, जाते–जाते पापाजी को आवाज दी, पापाजी! पापाजी ने अखबार से अपनी नजर हटा कर अजय की तरफ देखा और कहा "हाँ बोलो बेटा?" अजय ने मुस्करा कर कहा "पापाजी आज एक नयी मूवी रिलीज हुई है, आप जा कर देख आना। और हाँ! अपने किसी दोस्त को ले जाना चाहें तो उसको भी ले जाना। मैंने दो टिकटें आपके मोबाइल पर भेज दी हैं. "पापाजी मुस्करा कर फिर अखबार पढ़ने लगे। अजय ने रिया से आँखों –आँखों में ही पूछा "ठीक है ना." रिया ने मुस्करा कर हाँ में सिर हिला दिया। आज अजय अपनी एक सोच बदल के अपने को बहुत हल्का महसूस कर रहा था।

हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है – कमलापति त्रिपाठी

नीरज कौशिक

चमकीला पत्थर

एक मछुवारा प्रतिदिन मछली पकड़ने के लिए जाता था। एक दिन बडी मछली जाल में आ गई। तो वो उसको बाजार में बेचने नहीं गया। घर में ही उसको पकाने के लिए ले आया। मछली को काटते ही उसके पेट में एक चमकीला पत्थर निकला। वो उस पत्थर को लेकर राजा के पास गया। राजा ने दरवार के जौहरी को बुलाया चमकीले पत्थर की कीमत जानने के लिए, जौहरी ने राजा को चुपके से पत्थर का कीमत मामूली ही बतायी और कहा मछुवारे को कीमती पत्थर के बारे में पता नहीं है लकिन राजा को मछुवारे की हालत पर दया आ गयी। राजा ने सोचा मछुवारा आशा के साथ मेरे दरवाजे पर आया है, तो लौटाना सही नहीं होगा। राजा ने कहा– तुम हमारे खजाने में जाओ और तुम अपने मनचाही दौलत ले जा सकते हो... पर समय चार घंटे दिये जाते हैं, इसी समय के भीतर जीतना हो सके दौलत ले लो। तो मछुवारा जैसे ही महल के खजाने के भीतर गया तो सामने ही बढ़िया–बढ़िया खाने का सामान रखा था वो सोचने लगा कि चार घंटे तो बहुत होते हैं, पहले भोजन खा लूँ। राजकीय भोजन कहाँ मेरे भाग्य में लिखा है, सदैव गरीबी में ही जीवन बिता है। तो उसने पेट भर के भोजन खाया, फिर वो आगे बढा कि सुंदर मखमली बिस्तर तैयार दिखा। तो फिर सोचने लगा कि भोजन तो हो गया। कुछ देर सो लेने से आनंद आ जायेगा। चार घंटे तो बहुत हैं। तो वो बिस्तर पर सो गया कि चार घंटे व्यतीत हो गए। वो खजाने तक पहुंच ही ना सका। एक पहरेदार ने उठाया वो बडे आराम से सो गया था। उसको पहरेदार ने महल से बाहर निकलने को कहा। तुम्हारा समय खत्म हो गया। उसे खाली हाथ ही लौटना पड़ा। इस कथा का अर्थ यह है कि– हम लोग संसारी सामान रुपी मामूली चमकीला पत्थर को जब त्यागने की ठान लेंगें तभी भगवान, संत और सतसंग रुपी खजाना मिल जायेगा। भगवान कृ पा करने के लिए अनंतकाल से अपना बाहें फैलाये हम लोगों का इंतजार कर रहे हैं, पर हम लोग हैं कि संसार रुपी भोजन, बिस्तर में आनंदित हो रहे हैं। मतलब पंचेन्द्रियों से संसार का रस लेने में व्यस्त हैं... संसार के नशे में धुत्त हैं. मृत्यु के बाद हमारा कर्म ही हमें लात मारकर चौरासी लाख योनियों में पटक देगा... प्रेम, सेवा रुपी भक्ति महल तक नहीं पहुंच पायेंगें, यदि रास्ते भटक गये तो... संसारी रस में डुब गये तो... फिर मछुवारे की तरह... कुत्ते, गधे, बिल्ली, शुकर, कीड़े की योनियों में भटकने के लिए मजबूर हो जायेंगें।

* *

"भारतवर्ष के लिए हिंदी भाषा ही सर्वसाधरण की भाषा होने के उपयुक्त है– शारदाचरण मित्र

श्री जितेन्द्र प्रसाद

स्वर्ग यहां और नरक भी यहां

एक बुजुर्ग औरत मर गई, यमराज लेने आये। औरत ने यमराज से पूछा, आप मुझे स्वर्ग में ले जायेगें या नरक में? यमराज बोले दोनों में से कहीं नहीं। तुमनें इस जन्म में बहुत ही अच्छे कर्म किये हैं, इसलिये मैं तुम्हें सीधे प्रभु के धाम ले जा रहा हूँ। बुजुर्ग औरत खुश हो गई, बोली धन्यवाद, पर मेरी आपसे एक विनती है। मैनें यहां धरती पर सबसे स्वर्ग–नरक के बारे में बहुत सुना है, मैं एक बार इन दोनों जगहों को देखना चाहती हूँ। यमराज बोले तुम्हारे कर्म अच्छे हैं, इसलिये मैं तुम्हारी ये इच्छा पूरी करता हूँ। चलो हम स्वर्ग और नरक के रास्ते से होते हुए प्रभु के धाम चलेगें।

दोनों चल पडें, सबसे पहले नरक आया। नरक में, बुजुर्ग औरत ने जोर–जोर से लोगो के रोने कि आवाजें सुनी, वहां सभी लोग दुबले पतले और बीमार दिखाई दे रहे थे। औरत ने नरक के एक आदमी से पूछा, यहां आप सब लोगों कि ऐसी हालत क्यों है? आदमी बोला, मरने के बाद जब से यहां आये हैं, हमने एक दिन भी खाना नहीं खाया। भूख से हमारी आत्माएं तड़प रही हैं। बुजुर्ग औरत कि नजर एक विशाल पतीले पर पडी, जो कि लोगों के कद से करीब 300 फुट ऊंचा होगा, उस पतीले के ऊपर एक विशाल चम्मच लटका हुआ था। उस पतीले में से बहुत ही शानदार खुशबू आ रही थी। बुजुर्ग औरत ने उस आदमी से पूछा इस पतीले में क्या है? आदमी मायूस होकर बोला, ये पतीला बहुत ही स्वादिष्ट खीर से हर समय भरा रहता है। बुजुर्ग औरत ने हैरानी से पूछा, इसमें खीर है, तो आप लोग पेट भरके ये खीर खाते क्यों नहीं, भूख से क्यों तड़प रहें हो? आदमी रो–रो कर बोलने लगा, कैसे खायें? ये पतीला 300 फीट ऊंचा है हममें से कोई भी उस पतीले तक नहीं पहुँच पाता। बुजुर्ग औरत को उन पर तरस आ गया। सोचने लगी बेचारे, खीर का पतीला होते हुए भी भूख से बेहाल हैं। शायद ईश्वर नें इन्हें ये ही दंड दिया होगा!

यमराज बुजुर्ग औरत से बोले चलो हमें देर हो रही है। दोनों चल पडे, कुछ दूर चलने पर स्वर्ग आया। वहां पर बुजुर्ग औरत को सबके हंसने, खिलखिलाने कि आवाज सुनाई दी। सब लोग बहुत खुश दिखाई दे रहे थे। उनको खुश देखकर बुजुर्ग औरत भी बहुत खुश हो गई और स्वर्ग में भी बुजुर्ग औरत कि नजर वैसे ही 300 फूट ऊंचे पतीले पर पडी जैसा नरक में था, उसके ऊपर भी वैसा ही चम्मच लटका हुआ था। बुजुर्ग औरत ने वहां लोगो से पूछा, इस पतीले में क्या है? स्वर्ग के लोग बोले के इसमें बहुत ही स्वादिष्ट खीर है। बुजुर्ग औरत हैरान हो गई और उनसे बोली,

पर ये पतीला तो 300 फीट ऊंचा है, आप लोग तो इस तक पहुँच ही नहीं पाते होगें? उस हिसाब से तो आप लोगों को खाना मिलता ही नहीं होगा, आप लोग भूख से बेहाल होगें, पर मुझे तो आप सभी इतने खुश लग रहे हो, ऐसा कैसे? लोग बोले, हम तो सभी लोग इस पतीले में से पेट भर के खीर खाते हैं।

औरत बोली पर कैसे, पतीला तो बहुत ऊंचा है? लोग बोले, क्या हो गया पतीला ऊंचा है तो, यहां पर कितने सारे पेड़ हैं, ईश्वर ने ये पेड़ पौधे, नदी, झरने हम मनुष्यों के उपयोग के लिये तो बनाएं हैं। हमनें इन पेड़ो कि लकडी ली, उसको काटा, फिर लकड़ियों के टुकडो को जोड़ के विशाल सीढी का निर्माण किया। उस लकडी की सीढी के सहारे हम पतीले तक पहुंचते हैं और सब मिलकर खीर का आंनद लेते हैं।

बुजुर्ग औरत, यमराज कि तरफ देखने लगी, यमराज मुस्कायें और बोले ईश्वर ने स्वर्ग और नरक मनुष्यों के हाथों में ही सौंप रखा है, चाहें तो अपने लिये नरक बना लें, चाहे तो अपने लिये स्वर्ग, ईश्वर ने सबको एक समान हालातों में डाला हैं, उसके लिए उसके सभी बच्चें एक समान हैं, वो किसी से भेदभाव नहीं करता।

वहां नरक में भी पेड़ पौधे सब थे, पर वो लोग खुद ही आलसी हैं, उन्हें खीर हाथ में चाहिए, वो कोई कर्म नहीं करना चाहते, कोई मेहनत नहीं करना चाहते, इसलिये भूख से बेहाल हैं। क्योंकि ये ही तो ईश्वर कि बनाई इस दुनिया का नियम है, जो कर्म करेगा, मेहनत करेगा, उसी को मीठा फल खाने को मिलेगा।

स्वर्ग और नरक आपके हाथ में है मेहनत करें, अच्छे कर्म करें और अपने जीवन को स्वर्ग बनाएं। मेहनत वो चाबी है, जो भाग्य के द्वार खोलती है।

''हिंदी भाषा और साहित्य ने तो जन्म से ही अपने पैरों पर खड़ा होना सीखा है– धीरेन्द्र वर्मा

कपिल इष्टवाल

एक भयानक रात (आपबीती)

उत्तराखंड जिसे हम देवभूमि भी कहते हैं। हम इसे देवभूमि इसलिए कहते है क्योंकि यहाँ देवताओं का निवास होता है। मेरा सौभाग्य है कि मैं उत्तराखंड का रहने वाला हूँ। उत्तराखंड के जिला पौड़ी गढ़वाल में छोटा सा गाँव है इसोटी, मैं वहाँ का रहने वाला हूँ। दोस्तों मेरा मानना है जिंदगी में कोई भी चीज यूं ही नहीं होती कोई न कोई तर्क जरूर होता है। जैसे अगर दिन है तो रात भी है, अगर सच है तो झूठ भी है तो फिर अगर भगवान होते हैं तो फिर क्या.........

यह बात उस समय की है जब मेरी उम्र 20 वर्ष की थी। मैं और मेरे दोस्तों ने मिलकर घूमने का विचार बनाया, तय हुआ कि हम सब मेरे गाँव घूमने चलेंगे। गाँव में मेरी चाची जी, मेरी चचेरी बहन और दादी जी रहती थी और उन दिनों दादी जी हमारे घर (फरीदाबाद) आयी हुई थी। चाची जी और बहन गाँव में ही थी, नीचे के कमरे में चाची जी का परिवार था और ऊपर का कमरा दादी जी का था। दादी जी से घर की चाभी लेकर मैं और मेरे पाँच दोस्त मेरे गाँव घूमने निकल गए। दोस्तों के नाम निम्नलिखित है।

1. राहुल अग्रवाल
2. विकास अग्रवाल
3. अरविंद पांडे
4. नितिन गोयल
5. दिनेश मसंद

तो हुआ यूं कि दिन भर सफर करने के बाद जब हम मेरे गाँव पहुंचे तो हमने पहले आराम किया और फिर शाम को गाँव घूमने निकाल गए। जब हम घर पहुंचे तो हमारे दिमाग में शरारत सूझी कि आज मस्ती करते है और रात में सोते वक्त अपने दोस्त अरविंद पांडे को डराते हैं। रात के खाने के समय चाची जी और हम सब बातें कर रहे थे।

रात के समय हमारे गाँव में कोई बाहर नहीं निकलता क्योंकि काफी घनघोर अंधेरी रात होती है और खतरनाक जानवरों (बाघ) का भी खतरा रहता है, यहाँ तक कि लघुशंका के लिए भी नहीं। घनघोर अंधेरी रात को देखते हुए राहुल ने चाची जी से पूछा कि रात को बाहर निकल सकते हैं क्या? तो चाची जी ने मना कर दिया बल्कि ये भी कहा कि दरवाजा नहीं खोलना चाहे मैं भी क्यूँ न हूँ। क्योंकि गांवों में उपरी हवा का होना एक आम बात है। गाँव में जो हमारा घर है वो पुराने जमाने का है जिसे हम झोपड़ी के नाम से जानते है। घर की स्थिति को देखते हुये अंदर डर का माहौल लगता था। जो कि हमारी योजना के हिसाब से बिलकुल उपयुक्त था। घर में दो दरवाजे और एक खिड़की थी, जो की गाँव की लकड़ियों से बनाए गए थे। खिड़की और दरवाजों में दरारे

थी उनमे से एक दरवाजे में दो जली हुई करचियाँ क्रॉस (ग) करके लगी हुई थी ऐसा क्यूँ था मुझें भी पता नहीं था। शायद वो दो जली हुई करचियाँ ऊपरी हवा के चक्कर में हीं दरवाजे में लगीं हो।

झोपड़ी में दो कमरे थे, एक दरवाजे के साथ था और दूसरा अंदर की तरफ था। हमने योजना बनाई कि मैं, दिनेश और अरविंद बाहर वाले कमरे में सोएंगे जो कि दरवाजे और खिड़की के साथ सटा हुआ था। मैं और दिनेश पलंग में सोएंगे और अरविंद नीचे जमीन में गद्दा लगा कर सोएगा और हम अपने सिरहाने के पास एक लकड़ी रख कर लेटेंगे जिससे कि हम दरवाजे या खिड़की पर धीरे–धीरे ठक–ठक कर सकें जिसे सुन कर अरविंद डरे। पर पता नहीं कैसे अरविंद को उस योजना के बारे में आभास हुआ या उसे डर लगा और वो निश्चित जगह पर नहीं सोया और अंदर वाले कमरे में सोने चला गया। हम सब का मूड खराब हुआ और हमने भी सोने की तैयारी कर ली और दिन भर थके होने के कारण गहरी नींद में सो गए।

फिर अचानक आधी रात लगभग दो बजे मेरी आँख खुली। मुझे दरवाजे पर एक हल्की सी दस्तक सुनाई दी और यकीन मानो दोस्तों वह दस्तक ठीक वैसी ही थी जैसा हम अरविंद के लिए करने वाले थे। मुझें अंदर ही अंदर हंसी आने लगी ऐसा लगा शायद ये सब दिनेश तो नहीं कर रहा जो कि मेरे साथ सोया हुआ था। मैंने देखा लकड़ी तो मेरे सर के पीछे ही पड़ी हुई थी। फिर मन में सवाल आया कि फिर कौन है? तभी मुझे महसूस हुआ कि खिड़की की दूसरी तरफ से कोई परछाई मुझें दिखी। जैसे ही वो परछाई खिड़की की तरफ आई तो वह हल्की सी ठक–ठक की आवाज फिर आई। मैंने गौर से देखा जैसे ही वह साया खिड़की को क्रॉस करके गुजरता तभी ठक–ठक की आवाज आती और जैसे ही वापस होता आवाज बंद हो जाती ऐसा 3 या 4 बार हुआ। दोस्तों उस समय मेरा डर से क्या हाल था ये या तो भगवान जानते है या खुद मैं। मैं शब्दों मे ब्यान नहीं कर सकता कि मै कितना डर गया था। मैं डर के मारे अपने बगल में लेटे दिनेश को भी नहीं उठा पा रहा था, मैं सिर्फ आँख बंद करके यह सोच रहा था कैसे भी कर के यह आवाज मुझे न सुनाई दे। मैं भगवान से प्रार्थना कर रह था, हनुमान चालीसा का स्मरण कर रहा था कि भगवान मुझे या तो बेहोश कर दो या सुला दो। मैं यह सब ना देखना चाहता था और ना ही वो ठक–ठक की आवाज सुनना चाहता था। फिर भगवान ने मेरी सुन ली मुझे पता ही नहीं चला कि कैसे और कब मुझें नींद आ गयी।

जब मैं सुबह उठा तो यह सोच रहा था कि बीती रात क्या हुआ। मैं किसी से कुछ बोलूँ या ना बोलूँ ये क्या सोचेंगे, हँसेंगे मुझपे या डरेंगे। कुछ देर बाद मैंने सुना सारे दोस्त आपस में चर्चा कर रहे थे इसी बात पर कि रात को तुम्हें भी वो आवाज सुनाई दी। फिर मैंने भी पुष्टि करी कि क्या क्या हुआ था और मैंने क्या देखा। ये सुनकर सब डर गए और वहाँ से तुरंत निकलने का फैसला लिया और निकल गए।

आज भी जब इस घटना के बारे में सोचता हूँ तो डर लगता है कि उस रात क्या हुआ।

हिंदी भाषा की उन्नति का अर्थ है राष्ट्र और जाति की उन्नति–रामवृक्ष बेनीपुरी

कपिल इष्टवाल

मेरे जीवन की प्रेरणादायक कहानी

ये बात उस समय की है जब मैंने कक्षा 12वीं मे प्रवेश किया था। उस समय मेरे परिवार में मेरे पिताजी (जो घर के मुखिया थे और एनसीबी में कार्यरत थे), माता जी (गृहिणी) और मेरे बड़े भाई रहा करते थे। मेरे पिताजी का स्वभाव बड़े गुस्से वाला था। वह घर में पूरा अनुशासन बनाए रखते थे। पिताजी को खेल में बहुत रुचि थी और वह बहुत अच्छे वॉलीबाल के खिलाड़ी भी थे।

हमारा परिवार बड़ा खुशहाल चल रहा था। गर्मियों की छुट्टियों का समय चल रहा था। पिताजी रोज की दिनचर्या की तरह दफ्तर गए हुये थे। अचानक दफ्तर से खबर मिली की पिताजी की तबीयत खराब हो गयी है और उन्हें हॉस्पिटल ले जाया गया है। मैं और मेरा परिवार हॉस्पिटल पहुंचा तो पता चला की उन्हें दिल का दौरा पड़ा है। यह सुनकर हम सब घबरा गए और हमे यकीन ही नहीं हुआ।

इलाज के बाद जब पिताजी घर लौटे तो उन्होने कभी स्वीकार ही नहीं किया की उन्हें दिल का दौरा आ सकता है। उन्होने अपनी दिनचर्या पहले की तरह शुरू कर दी सुबह जल्दी उठना व घूमना इत्यादि।

परंतु नियति को कुछ और ही मंजूर था। पिताजी को पहला दिल का दौरा जून 2000 को आ चुका था और जल्द ही अगस्त 2000 मे दूसरा दौरा आ गया फिर संभलने का मौका नहीं मिला। अंत में 11 सितम्बर 2000 को पिताजी का निधन हो गया। हमारे जीवन मे ऐसा भूचाल आ गया जिसकी भरपाई कोई नहीं कर सकता था।

पिताजी के निधन के बाद एनसीबी दफ्तर से मुझें बहुत सहारा मिला। एनसीबी मैनेजमेंट ने हमारे परिवार की स्थिति को समझा और जीवन यापन के लिए नौकरी का प्रस्ताव दिया। हमारे परिवार ने नौकरी के लिए मुझें चुना और परिस्थितियों को देखते हुए मैंने भी स्वीकार कर लिया।

26 नवम्बर 2000 को मैंने एनसीबी दफ्तर में नौकरी की शुरुआत की। उस समय मैं कक्षा 12वीं में था। एनसीबी ऑफिस मुझें अपने परिवार की तरह लगा। मैंने दफ्तर के साथ–साथ 12वीं कक्षा भी पास की।

एनसीबी में आने के बाद मुझें कोई भी अधिकारी या कर्मचारी मिलते थे तो वह सब मुझ से मेरे पिताजी के बारे में बातें किया करते थे और हर कोई यही कहता था कि आपके पिताजी जैसा इंसान हमने नहीं देखा।

मेरे पिताजी एनसीबी में ड्राईवर के पद पर कार्यरत थे। एक बार एक अधिकारी ने बताया कि पिताजी कि ड्यूटी उनके साथ थी और वह लोग दिल्ली से वापस आ रहे थे। तभी पिताजी ने देखा कि एक नेत्रहीन व्यक्ति सड़क पार कर रहा था। पिताजी ने तुरंत गाड़ी को साइड लगाकर उस व्यक्ति की सड़क पार करने में मदद की। उनका व्यवहार और दूसरों कि मदद के लिए आगे आना और बढ–चढ़ कर हिस्सा लेना उनकी पहचान थी। यह बात मैंने अनेकों बार सुनी और मैं उनके बारे में सुनकर खुश होता था।

धीरे–धीरे समय बीतता गया और यही सिलसिला चलता रहा, सभी लोग मुझसे पिताजी की बातें किया करते और उनके व्यवहार कि तारीफें करते रहते। मेरे पिताजी कि वजह से मेरी पहचान होती थी और मुझे बहुत खुशी होती थी।

मुझें पता ही नहीं चला कि मैं कब उनके पद चिन्हों पर चलने लगा और कब वो मेरे जीवन की प्रेरणा का स्त्रोत बन गए। आज मैं जब कभी भी किसी की मदद करता हूँ तो मुझें अपने पिताजी की याद आती है। अगर वो आज मुझे देखते होंगे तो उन्हे बहुत खुशी होती होगी, जैसे मुझें उनके बारे मे सुनकर होती थी।

मेरे पिताजी मेरे जीवन की प्रेरणा का स्त्रोत है।

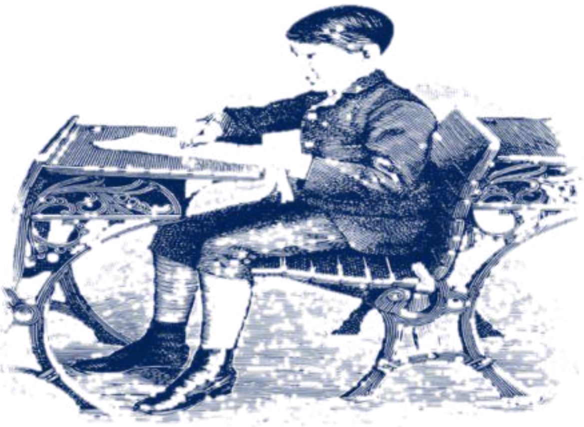

भाषा राष्ट्रीय शरीर की आत्मा है–स्वामी भवानीदयाल संन्यासी

प्रीशा गोस्वामी
जितेन्द्र गोस्वामी

लॉक डाउन का सकारात्मक पक्ष

इस महामारी के समय में, हम सभी लॉकडाउन के प्रभावों के बारे में कुछ भी जाने बिना अचानक लॉकडाउन के कारण घर में रह रहे थे। कुछ लोगों ने अपनी नौकरी खो दी, कुछ ने वित्तीय समस्याओं का सामना किया और कुछ लोगों को आश्रय आदि नहीं मिला...

लेकिन मुझें इस लॉकडाउन का एक सकारात्मक पक्ष भी मिला, जो मुझे सबसे ज्यादा पसंद आया। हमारे प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने आत्मानिर्भर भारत की शुरुआत की, जिसका अनुवाद आत्मनिर्भर भारत है, जो भारत को "वैश्विक अर्थव्यवस्था का एक बड़ा और महत्वपूर्ण हिस्सा" बनाने में नरेंद्र मोदी जी का दृष्टिकोण है और वोकल फॉर लोकल को भी बढ़ावा दिया, जिसका अर्थ है कि केवल घरेलू रूप से निर्मित उत्पादों का उपयोग न करना और उन्हें बढ़ावा देना आदि।

हमने ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का उपयोग करना सीखा और इसने हमें और अधिक हाइटेक बना दिया और अब हम सभी ने खुद को अपडेट कर लिया है। एक छात्र के रूप में, हमारे सीखने को रोका नहीं गया है, वे अभी भी चल रहे हैं! लोगों ने आय के साधन के लिए सोशल साइट्स पर अपने ऑनलाइन व्यवसाय भी शुरू किए।

दूसरी ओर, हम सभी घर में रह रहे थे, इसलिए इसने परिवार के सदस्यों के साथ संबंध को बेहतर बनाया, साथ ही, हमारे बीच समझ और भी बेहतर हो गई। हमारे पास कुछ बदलाव भी थे, हम धैर्य, समायोजन, सहनशीलता, और सबसे महत्वपूर्ण रूप से हम किसानों, पुलिस अधिकारियों, डॉक्टरों और उन सभी लोगों का सम्मान करने के लिए आए, जो इस महत्वपूर्ण समय में भी काम करते थे। इन लोगों के कारण ही हम अपने घरों में अच्छी तरह से रह रहे हैं।

सकारात्मक रहें। मुझे आशा है, कि हम इस तरह के वाइरस से जल्दी मुक्त हो जाएंगे। घर रहें, सुरक्षित रहें।

हिंदी ने राष्ट्रभाषा के पद पर सिंहानसारूढ़ होने पर अपने ऊपर एक गौरवमय एवं गुरुतर उत्तरदायित्व लिया है–गोविंदबल्लभ पंत

सुनीता (पूनम कनौजिया)

एक भारत श्रेष्ठ भारत

(भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में)

मन मोहिनी प्रकृति, की गोद में जा बसा है।
सुख स्वर्ग सा जहाँ है, वह देश कौन सा है !!
जिसका चरण निरंतर, रत्नेश धो रहा है।
जिसका मुकुट हिमालय, वह देश कौन सा है !!
नदियाँ जहाँ सुधा की, धारा बहा रही है।
सींचा हुआ सलोना, वह देश कौन सा है !!
जिसके बड़े रसीले, फल कुंद नाज मेवे।
सब अंग में सजे हैं, वह देश कौन सा है !!
जिसमें सुगंध वाले, सुंदर प्रसून प्यारे।
दिन रात हँस रहे हैं, वह देश कौन सा है !!
मैदान गिरी वनों में, हरियालियाँ लहकती।
आनंदमय जहाँ है, वह देश कौन सा है !!
जिसके अनन्त धन से, धरती भरी पड़ी है।
संसार का शिरोमणि, वह देश कौन सा है !!

पूरे विश्व में भारत अपनी संस्कृति और परम्परा के लिए प्रसिद्ध देश है। ये विभिन्न संस्कृतियों और परम्पराओं की भूमि है। 'भारतीय संस्कृति' विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति है, इसे विश्व की सभी संस्कृतियों की जननी कहा जाता है, जीने की कला हो या विज्ञान और राजनीति का क्षेत्र, भारतीय संस्कृति का सदैव विशेष स्थान रहा है, अन्य देशों की संस्कृतियाँ तो समय की धारा के साथ–साथ नष्ट होती रही है, किन्तु भारत की संस्कृति आदि काल से ही अपने परम्परागत अस्तित्व के साथ अजर–अमर बनी हुई है।

विश्व के सभी क्षेत्रों और धर्मों की अपने रीति–रिवाजों, परम्पराओं और परिष्कृति गुणों के साथ अपनी संस्कृति है, भारतीय संस्कृति स्वाभाविक रूप से शुद्ध है जिसमें प्यार, सम्मान, दूसरों की भावनाओं का मान–सम्मान और संस्कार अन्तर्निहित है, भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्वों, जीवन मूल्यों और वचन परिणयता में एक ऐसी निरन्तरता रही है कि आज भी करोड़ों भारतीय स्वयं को उन मूल्यों एवं चिन्तन प्रणाली से जुड़ा हुआ महसूस करते हैं और इससे प्रेरणा प्राप्त करते हैं । पाश्चात्य

विद्वान् तो अपने देश की संस्कृति को समझने हेतु भारतीय संस्कृति को पहले समझने का परामर्श देते हैं। इसके अतिरिक्त भारत की अन्य परम्पराएँ जैसे अतिथि देवों भवः, सामाजिक आचार–व्यवहार, शरणागत रक्षा, सर्वधर्म समभाव, वसुधैव कुटुम्बकम, अनेकता में एकता जैसी प्रमुख हैं। भारतीय संस्कृति से उत्सर्जित "वसुधैव कुटुंबकम" से हमने समस्त विश्व को जहाँ नजदीक लाकर एक बना दिया है, वहीं "अतिथि देवों भवः" की भावना से परायों को भी अपना बना लिया है। भारतीय संस्कृति में अतिथियों को भगवान का रुप माना गया है। हमारे देश में आने वाले मेहमानों का विशेष तरीके से स्वागत कर उनको सम्मान दिया जाता है।

भारतीय संस्कृति की आत्मा में जहाँ अतिथि देवों भवः का मूल तत्व विधमान हैं। वही गुरु का सम्मान भी हमारी संस्कृति के मूल में विद्यमान है। भारतवर्ष में शुरू से ही गुरु का सम्मान किया जाता है। भारतीय संस्कृति के अनुसार गुरु का स्थान और सम्मान भगवान से भी बढकर है

"गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वररू।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः"।।

भारत के सभी सम्प्रदायों और पंथों में गुरु को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। सद्गुरु कबीर ने तो यहाँ तक कह दिया कि

करता करे न कर सके, गुरु कर सो जान।
तीन–लोक नौ, खण्ड में गुरु से बड़ा न कोय।।

गुरु की आज्ञा पर जो शिष्य चलता है उससे तो स्वयं मौत भी आने से एक बार नहीं अनेक बार सोचती है। पूर्ण गुरु में ही सामर्थ्य कि वो प्रकृति के नियम को बदल सकतें हैं जो ईश्वर भी नहीं बदल सकते, क्योंकि ईश्वर भी प्रकृति के नियम से बंधे होते हैं लेकिन सद्गुरु नहीं।

इसीलिए भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान ईश्वर से भी ऊपर माना गया है। कबीर दास जी ने भी कहा है–

'गुरु गोविन्द दोउ खड़े, काके लागूं पांय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दियो बताय'।।

गुरु पूर्णिमा का पर्व गुरु की महानता को समर्पित है। वहीं प्राचीन समय से ही भारत कला विज्ञानं और बल – बुद्धि का स्रोत रहा है। आध्यामिकता और योग की संस्कृति ने भारत को जगतगुरु की श्रेंणी में ला खड़ा किया है। भारत को महान एवं विश्व गुरु बताते हुए "मैं अखिल विश्व का गुरु महान" कविता में स्वर्गीय पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी भारत को मुक्ति मार्ग का अन्वेषक बताते हुए कहते हैं :–

मैं अखिल गुरु का विश्व महान,
देता विद्या का अमर दान,
मैंने दिखलाया मुक्ति मार्ग
मैंने सिखलाया ब्रहम ज्ञान।

योग और अध्यात्मिकता से परिपूर्ण भारत के सांस्कृतिक धरातल पर पर्यावरण को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। वृक्ष, नदियाँ और पशु–पक्षी भारतीय संस्कृति में अराध्य है। भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण को भी बहुत महत्त्व दिया गया है। भारतीय चिन्तन में पर्यावरण संरक्षण की अवधारणा उतनी ही प्राचीन है जितना यहाँ का मानव जाति का ज्ञात इतिहास है। हडप्पा संस्कृति पर्यावरण से ओत–प्रोत थी, तो वैदिक संस्कृति पर्यावरण संरक्षण हेतु पर्याय बनी रही। भारतीय मनीषियों ने समूची प्रकृति ही क्या सभी प्राकृतिक शक्तियों को देवता स्वरूप माना। उर्जा के स्रोत सूर्य को देवता माना तथा उसको "सूर्य देवो भवः" कहकर पुकारा। भारतीय संस्कृति में जल को भी देवता माना गया है। सरिताओं को जीवनदायिनी कहा गया है। भारतीय संस्कृति में केला, पीपल, तुलसी, बरगद, आम आदि पेड़ पौधों की पूजा की जाती रही है। पर्यावरण संरक्षण के नाम पर समस्त संसार के लिए प्रेरणा स्रोत राजस्थान के खेजड़ी गाँव के विश्नोई समाज की नारियों ने अपने प्राणों की आहुति दी जिससे चिपको आन्दोलन को प्रेरणा मिली। अधिकतर भारतीय पर्व व त्यौहार में प्रकृति संरक्षण का पुण्य स्मरण है चाहे वे वैशाखी हो, वसंत हो, छठपूजा या गोवर्धन पूजा हो। भारत के आदिवासी समाज में प्रकृति को जीवन की रीढ़ माना गया है। इनके हर रीती–रिवाज, पर्व–त्योहार, जीवन–मरण में प्रकृति शामिल है। झारखंड का स्थुल्पर्व इसका जीता जागता उदहरण प्रस्तुत करता है।

भारतीय संस्कृति की सहिष्णु प्रकृति ने उसे दीर्घ आयु और स्थायित्व प्रदान किया है। संसार की किसी भी संस्कृति में शायद ही इतनी सहनशीलता हो, जितनी भारतीय संस्कृति में पाई जाती है। भारतीय संस्कृति की सहिष्णुता एवं उदारता के कारण उसमें एक ग्रहणशीलता प्रवृति को विकसित होने का अवसर मिला। वस्तुतः जिस संस्कृति में लोकतन्त्र एवं स्थायित्व के आधार व्यापक हों, उस संस्कृति में ग्रहणशीलता की प्रवृत्ति स्वाभाविक रूप से ही उत्पन्न हो जाती है, हमारी संस्कृति में यहाँ के मूल निवासियों ने समन्वय की प्रक्रिया के साथ ही बाहर से आने वाले शक, हूण, यूनानी एवं कुषाण जैसी प्रजातियों के लोग भी घुलमिल कर अपनी पहचान खो बैठे।

भारत का सबसे छोटा राज्य गोवा किसी परिचय का मोहताज नहीं हैं। इसे 'रोम ऑफ द ईस्ट' के नाम से भी जाना जाता हैं। गोवा में विभिन्न धर्म के लोग हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई और कैथोलिक का एक खूबसूरत मिश्रण देखने को मिलता हैं। गोवा राज्य के निवासी अपनी पुरानी परम्पराओं को ध्यान में रखते हुए सभी त्यौहार को बहुत ही धूम–धाम से मनाते हैं।

भारत ही केवल एक ऐसा देश है जहाँ सर्वधर्म समभाव को पूरा सम्मान दिया गया है, जितना सम्मान हम अपने धर्म का करते हैं उतना ही सम्मान हम सभी धर्मो का करते हैं। जहाँ तक देश में पूर्व से लेकर पश्चिम तक और उत्तर से लेकर दक्षिण तक भारतीय संस्कृति के उदात्त स्वरूप का प्रश्न है, हमें विविधता में एकता ने बड़े ही अद्भूत रूप में बुनकर रखा है। हमारे विश्वास अलग हो सकते हैं, धर्म अलग हैं, सम्प्रदाय हैं, रहन–सहन, खान–पान और प्रथा–परम्परा में थोडा बहुत अंतर हो सकता है। पर हमारी मूल सोच एक है। भारत में मनाएं जाने वाले विभिन्न तीज त्यौहार और मेले उत्सवों का आयोजन अनेकता में एकता का यह इंद्रधनुषी रूप हमारे देश के सांस्कृतिक ताने–बाने को संजोये हुए हैं। अनेक बोलियाँ हैं, भाषाएँ हैं, साहित्य की विधाएँ हैं और मान्यताएं हैं। परन्तु हमारी संस्कृति के धागों की बुनावट ऐसी है कि हम सब भावात्मक रूप से एक सूत्र में बंधे हैं। भारत में मनाया जाना वाला फसलों से जुडा मकर संक्रान्ति का त्यौहार अलग– अलग प्रान्त में

अलग–अलग नामों से मनाया जाता हैं। उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश में मकर संक्रान्ति व खिचड़ी के नाम से मनाया जाता है। गुजरात में इसे पंतग पर्व व उतरान के नाम से जाना जाता है तो दक्षिण में तमिल लोग पोंगल और केरल वासी ओणम के नाम से मनाते हैं। वहीं असम में माघ बीहू, महाराष्ट्र में गुडी पड़वा, झारखण्ड में सरहुल और जम्मू कश्मीर, पंजाब में लोहड़ी के नाम से मनाया जाता है। इस दिन पंजाबी भाई जगह–जगह अलाव जलाकर उसके चारो ओर भांगड़ा गिद्दा नृत्य कर अपनी खुशी जाहिर करते हैं।

हमारे त्यौहार ही नहीं हमारे लोक नृत्य, लोकसंगीत, चित्रकला साझी संस्कृति को अभिव्यक्त करते हैं।

देश है मेरा ऐसा अलबेला
यहाँ नहीं रहता कोई अकेला
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई
कई धर्मों से बना ये देश मेरा
विभिन्न बोलियाँ यहाँ बोली जाती
ऐसा सर्वगुण देश है मेरा।

बड़ों का सम्मान, छोटो को प्यार
हमारी संस्कृति हमें सिखाती
प्रेम की बोली बोलो, यहीं हमें बताती,
अनेकता में एकता
यही हमारी संस्कृति की है विशेषता।

ईद में गले लगाएँ, एक हैं हम ये बताएँ
हर खुशी पर्व बन जाती।

हर त्योहार हमारा इतिहास बताता,
बिहू हो, गरबा हो या भांगड़ा, घूमर या लावणी,

हर राज्य में लोक प्रिय नृत्य है उसका
अवसर कोई भी हो नृत्य किए बिना पूरा न होता,
ईश्वर के सामने मस्तिष्क झुकाएँ बिना यहाँ कोई नहीं सोता,
वीरों को सम्मान मिलें और पूजी जाती है नारी,
कर्म हमारा ऐसा हो,

दूर करे गरीबी और लाचारी,
माँ का दर्जा देते हम अपने इस देश को
सदा अमर रहें यह देश हमारा
संस्कृति और परंपराओं का समवाहक देश हमारा।

मानस भवन में आर्यजन जिसकी उतारें आरती। भगवान भारतवर्ष में गूँजे हमारी भारती
– मैथिलीशरण गुप्त

मो. एम. जमाली

जीवन के कड़वे सच

- जीवन में जो नसीब में होगा चलकर आयेगा जो नहीं होगा आकर भी चला जाएगा।
- जिंदगी को इतना सिरियस न लो यारो, यहाँ से जिंदा बच कर कोई नहीं जाएगा।
- अगर जिंदगी इतनी अच्छी होती तो हम इस दुनिया में रोते रोते नहीं आते और अगर जिंदगी इतनी बुरी होती तो हम जाते जाते लोगों को रुलाकर नहीं जाते।
- आप के पास मारुति कार हो या हो बी एम डबल्यू लेकिन रोड वही रहेगा, आप सफर इकॉनमी क्लास में करें या बिजनस क्लास में आप का वक्त उतना ही लेगेगा, आप टाइटन घड़ी पहनो या रोलेक्स लेकिन समय वही बताएगा, आप के पास एप्पल का मोबाइल हो या सैमसंग का लेकिन आपको कॉल करने वाले लोग वही रहेंगें।
- अच्छे जीवन जीने की लालसा रखने में कोई बुराई नहीं है लेकिन सावधान रहें क्योंकि जरूरतें पूरी हो सकती है तृष्णा नहीं।
- अगर किसी को अधिक पैसे का घमंड हो तो एक चक्कर कब्रिस्तान का लगा लिया करे क्योंकि यहाँ तुम से भी ज्यादा पैसे वाले लोग हजारों टन मिट्टी के नीचे दफन हैं।
- दुनिया का कोई पीर पंडित किसी का नसीब नहीं बादल सकता है सिर्फ नाम की कमाई द्वारा आपके कर्म ही आपका भाग्य बादल सकता है।
- आपकी नीयत से ईश्वर खुश होते हैं और दिखावे से इंसान, ये आप पर निर्भर करता है कि आप किसको प्रसन्न करना चाहते हैं।
- तकलीफें तो हजारों हैं इस जमाने में मगर जब कोई अपना नजर अंदाज कर दे तो बर्दाश्त नहीं होता।
- चेहरे पर मुस्कान दिलों में लेकर खाई बैठे हैं,करके सारे लोग हिसाबे पाई पाई बैठे हैं, आज वसीयत करने वाले हैं बाबूजी दौलत की घर में इकठ्ठे सारे भाई बैठे हैं।
- अकेले रहने का भी एक अलग सकून है, न किसी के वापस आने की ऊमीदें और न किसी के जाने का डर।

- पके हुए फल की तीन पहचान होती है,एक वह नर्म हो जाता है, दूसरा वह मीठा हो जाता है, तीसरा उसका रंग बदल जाता है, इसी तरह एक परिपक्व इंसान की तीन पहचान होती है, पहला उसमें नम्रता आ जाती है, दूसरा उसके वाणी में मिठास होती है और तीसरा उसके चेहरे पर आत्मविशवास का रंग होता है।
- लोग अब व्यवहारिक नहीं व्यवसायिक हो गए हैं, संबंध उनसे ही मधुर हैं जिनसे मुनाफा अधिक है।
- कोहरे से एक अच्छी बात सीखने को मिली है, जब जीवन में कोई रास्ता न दिखाई दे रहा हो तो बहुत दूर तक देखने की कोशिश व्यर्थ है, धीरे धीरे एक एक कदम चलते चले जाओ रास्ता खुद ब खुद खुलता चला जाएगा।
- खुशियाँ कम और अरमान बहुत है, जिसे भी देखो परेशान बहुत है, करीब से देखो तो रेत का घर है मगर दूर से देखो तो इसकी शान बहुत है। कहते हैं कि सच का कोई मुकाबला नहीं मगर आज झूठ की पहचान बहुत है, मुश्किल से मिलता है शहर में आदमी यूं तो कहने को यहाँ इंसान बहुत है।
- उड़ा भी दो सारी रंजिशें इन हवाओं में यारो छोटी सी जिंदगी है नफरत कब तक करोगे।
- घमंड न करना जिंदगी में तकदीर बदलती रहती है, शीशा वही रहता है बस तस्वीर बदलती रहती है।

——————— x ———————

मैं राष्ट्र का प्रेम, राष्ट्र के भिन्न–भिन्न लोगों का प्रेम और राष्ट्रभाषा का प्रेम, इसमें कुछ भी फर्क नहीं देखता – र. रा. दिवाकर

चारु बजाज

शिक्षा का महत्व

आज के इस युग में शिक्षा का अत्यधिक महत्व है। बिना शिक्षा प्राप्त किए हम जीवन में कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकते। शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति को जीवन जीने के लिए आत्मनिर्भर बनती है। अच्छी शिक्षा प्राप्त करके व्यक्ति अपने कैरियर को ऊंचाइयों पर ले जा सकता हैं ।

शिक्षा का महत्वः— शिक्षा व्यक्ति के जीवन का सर्वश्रेष्ठ धन है। शिक्षा हम सभी के उज्ज्वल भविष्य के लिए एक बहुत ही आवश्यक माध्यम है। शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जिसके बल पर हम जीवन में कुछ भी प्राप्त कर सकते है। शिक्षा व्यक्ति के सामाजिक स्तर को और पारिवारिक सम्मान को बढ़ाती है और उसकी एक अलग पहचान बनाने में मदद करती है। यह हममें आत्मविश्वास विकसित करने के साथ ही हमारे व्यक्तित्व निर्माण में भी सहायता करती हैं ।

शिक्षा सर्वश्रेष्ठ धन हैः— शिक्षा एक सर्वश्रेष्ठ धन है जिसे न तो कोई चुरा सकता है और न ही छीन सकता है। शिक्षा एक ऐसा धन है जिसको बांटने से यह कम नहीं होता बल्कि बढ़ता है। हमें हमारे जीवन में यह याद रखना चाहिए कि शिक्षा के द्वारा ही हमें समाज में सम्मान मिलता है और हम सर उठाकर जी सकते हैं।

निष्कर्षः— शिक्षा जीवन का सार है। शिक्षा नहीं तो जीवन बेकार है, नियमित और उचित शिक्षा हमें जीवन में लक्षय को प्राप्त करने के लिए सफलता की ओर ले जाती है। शिक्षा व्यक्ति के मस्तिष्क को बड़े स्तर पर विकसित करती है। यदि व्यक्ति शिक्षित है तो वह जीवन की प्रत्येक परिस्थितियों का सूझ—बुझ से सामना करेगा। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में अच्छी शिक्षा प्राप्त करके अपने जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त करने का पूरा प्रयत्न करना चाहिए।

देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता स्वयं सिद्ध है – महावीर प्रसाद द्विवेदी

रूबी मलिक

कोविड–19 लॉकडाउन और प्रद्यौगिकी (तकनीकी)

आज दुनियाभर में तबाही का सबसे बड़ा खतरा महामारी है, एक बहुत बड़ा संक्रमण वायरस जो अधिक विनाशकारी है और जिसने विश्व की प्रगति को तथा प्रत्येक कार्य को रोक सा दिया है। बच्चों की शिक्षाएँ, कर्मचारियों के काम मानो सब थम सा गया था, लेकिन इस कठिन दौर में हम सब को आगे बढाया प्रद्यौगिकी ने अर्थात तकनीकी ने। तकनीकी की सहायता से बच्चें अपनी शिक्षा ग्रहण करने में समर्थ है तथा संस्थान अपने कार्य कम समय में अधिक कर पा रहे है। फेसबुक, गूगल और यू टूयब जैसी कंपनिया लोगो को सही दिशा में काम करने के लिए अथक प्रयास कर रही है ।

दुनिया अब कोरोना वायरस के प्रभावी उपचार के तरीको को खोजने के लिए बेताब है। वायरल संरचनाओ को समझकर वैक्सीन के घटकों का सुझाव देने में ऐ.आई (आर्टिफीशियल इंटेलिजेंस) महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। आरोग्य सेतु एप्प भी तकनीकी का एक उदाहरण है, जो व्यापक बीमारी की खबर देने के लिए लांच की गयी, जिसके माध्यम से महामारी से सम्बंधित नवीनतम जानकारी समय समय पर मिलती रहती है ।

इस महामारी ने व्यवसाय की दुनिया को भी प्रभावित किया है। ऐसे परिदृश्य में वर्चुअल मीटिंग, क्लाउड कॉन्फ्रेंसिंग अग्रणी है। लॉकडाउन के दौरान हमने काम करने के नए तरीको को सिखा है जो की डिजिटल माध्यम से तकनीकी द्वारा ही संभव हुआ है। ऑनलाइन बेठेकें हमारे समय और व्यय दोनों को बचाती हैं। कोरोना की इस लड़ाई में तकनीकी ने एक अहम् रोल अदा कर रही है। आज सिर्फ तकनीकी के इस्तेमाल से सामाजिक दूरी का पालन करते हुए हम पूरी दुनिया से जुड़े हुए है।

तकनीकी के लाभ :

1 **विडियो कॉल** : क्वारंटाइन ने पूरी दुनिया का सामाजिक संवाद प्रभावित किया है, परन्तु इस दौरान वीडियो कालिंग जैसी तकनीकी लोगों के लिए अपनों से जुड़ने का जरिया बन गयी है। आज कल कर्मचारी विडियो कॉन्फ्रेंसिंग के द्वारा कई प्रकार के वेबिनार्स का आयोजन कर रहे है।

2 **ई–मेडिकल** : अस्पताल में संक्रमण से बचाव तथा कार्य बोझ कम करने और कोरोना के संक्रमण से बचाव के लिए टेली व ई–मेडिकल सुविधाए शुरू की गयी है।

3 **ई–लर्निंग**: स्कूल बंद होने के कारण विद्यार्थियों की पढाई न छूटे, तकनीकी के माध्यम से बच्चों को घर से पढ़ाने की पहल शुरू हुई । शैक्षिणक संस्थान लाइवस्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल कर रहे है, जिससे शिक्षक घर बठे लेक्चर दे सकते है।

4 **वर्क फ्रॉम होम** : लॉकडाउन में घर से काम करना एक बड़ी चुनौती है जिसे ऑनलाइन मीटिंग सॉफ्टवेर जैसे वेबेक्स ,जूम एप, गूगल मीट आदि ने आसन बना दिया | इस से जुड़े आयोजन व बैठकें विडियो कॉन्फ्रेंसिंग से हो रही है। वेबेक्स के माध्यम से समय की भी और आने जाने के वक्त की भी बचत होती है!

5 **मोबाइल एप**: लॉकडाउन में आपकी सबसे गहरी दोस्त ये एप साबित हुई है। लोग ऑनलाइन डिलीवरी व ई–पेमेंट का इस्तेमाल कर रहे है। कांटेक्ट ट्रेसिंग एप के जरिये कोरोना के स्थानीय मामलों का आसानी से पता लग रहा है। आरोग्य सेतु एप इसी का एक उदाहण है।

अंत में मैं यही कहना चाहूंगी कि "अब होगा हर काम सरल और सुलभ टेक्नोलॉजी बनाएगी जीवन को सरल और सुलभ"

हिंदी भाषा हमारे लिये किसने बनाया? प्रकृति ने। हमारे लिये हिंदी प्रकृतिसिद्ध है – पं. गिरिधर शर्मा

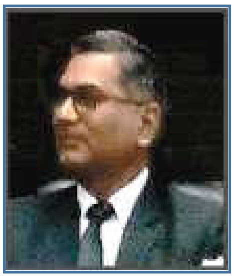

डॉ. राजबीर सिंह
महाप्रबंधक (राजभाषा)
एनएचपीसी लिमिटेड

विश्व भाषा हिंदी : स्वरूप और सामर्थ्य

प्रस्तावना :

हमारे देश की राष्ट्रीय पहचान की भाषा हिंदी विश्व की महत्वपूर्ण भाषा है। यह हमारी सामासिक, सामाजिक–सांस्कृतिक विरासत की वाहक भी है और राष्ट्रीय संपर्क एवं संकल्प की भाषा भी। विश्व में बोलने वालों की दृष्टि से हिंदी को प्रायः तीसरे स्थान पर रखा जाता है किन्तु अनेक सर्वेक्षणों द्वारा यह प्रमाणित हो चुका है कि बोलने वालों की संख्या की दृष्टि से इसका विश्व में दूसरा स्थान है। यह हिंदी के प्रति भावनात्मक या संवेगात्मक उदगार नहीं हैं वरन् विभिन्न अध्ययनों के आधार पर यह सिद्ध हो चुका है कि विश्व में चीनी भाषा के बाद हिंदी भाषा ही सबसे अधिक लोगों द्वारा बोली जाती है।

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार हमारे देश में लगभग 85 करोड़ लोग हिंदी समझते व बोलते हैं। हिंदी उस समय 122 करोड़ में से 53 करोड़ लोगों की मातृभाषा हिंदी थी जबकि अंग्रेजी आने वालों की संख्या लगभग 19 करोड़ और अंग्रेजी मातृभाषी केवल 2 लाख 26 हजार थे।

हिंदी भारत में राष्ट्रीय स्तर पर अकेली भाषा है, जो सम्पूर्ण राष्ट्र में संपर्क भाषा के रूप में प्रयुक्त है। यह भाषा अपनी सरलता, सहजता, सम्प्रेषणीयता और गुणवत्ता की दृष्टि से एक श्रेष्ठ भाषा है। इसका साहित्य व्यापक, विपुल और समृद्ध है। इसका इतिहास हजारों वर्ष पुराना है तथा राजभाषा के रूप में प्रयुक्ति की सैकड़ों वर्ष लंबी परम्परा है। इसमें अन्य भाषाओं से शब्द और रूप ग्रहण करने की अदभुत क्षमता और उदारता भी है व नए शब्दों के निर्माण की विलक्षण सृजनशक्ति भी।

यह भारत की शास्त्रीय भाषा संस्कृत की वास्तविक उत्तराधिकारिणी है। इसकी लिपि विश्व की सबसे वैज्ञानिक लिपि है। गत 50 वर्षों में हिंदी की शब्द संख्या में जितना विस्तार हुआ है उतना विश्व की शायद ही किसी भाषा में हुआ हो। आज शब्द संख्या की दृष्टि से यह संसार की सबसे समृद्ध भाषाओं में से एक मानी जाती है। तथाकथित विश्व भाषा अंग्रेजी में मूल शब्दों की संख्या

लगभग 10 हजार है जबकि हिंदी में मूल शब्दों की संख्या ढाई लाख से अधिक है। इस प्रकार स्पष्ट है कि विश्व की अत्यन्त महत्वपूर्ण भाषा है।

हिंदी का राष्ट्रीय स्वरूपः

हिंदी सम्पूर्ण भारतीय जन समाज के एकीकरण की भाषा रही है। हिंदी भारत की एकमात्र सार्वदेशिक संपर्क भाषा है। यही एक भाषा है जो देश की भौगोलिक सीमाओं के भीतर राष्ट्रीय समाज के विभिन्न वर्गों और क्षेत्रों में, विविध स्तरों पर एक से अधिक भूमिकाओं में प्रयुक्त हो रही है। यह भारत की राजभाषा, राष्ट्रभाषा, सांस्कृतिक भाषा, शास्त्रीय भाषा, साहित्यकि भाषा, तकनीकी भाषा – सभी प्रयुक्तियों में सशक्त रूप में प्रयुक्त होती है।

हमारे देश में संचार माध्यमों में सर्वाधिक प्रयुक्त होने वाली भाषा हिंदी है। सभी संचार माध्यमों – आकाशवाणी, टेलीविजन, समाचार पत्र व पत्रिकाओं, सिनेमा आदि में भारत में सबसे अधिक प्रचलित एवं लोकप्रिय भाषा है। आज सबसे अधिक चौनल हिंदी में हैं। आज सर्वाधिक फिल्में हिंदी में बनाती हैं। सबसे ज्यादा दर्शक हिंदी फिल्मों के हैं। सर्वाधिक हिंदी फिल्में हिंदीतर क्षेत्र (मुम्बई और चेन्नई) में बनाई जाती हैं। आज टी.वी. चौनलों एवं मनोरंजन की दुनिया में हिंदी सबसे अधिक मुनाफे की भाषा है। कुल मुनाफे का लगभग 75% हिंदी माध्यम में है। प्रत्येक देश के हर क्षेत्र में हिंदी बोलने वाले पर्याप्त संख्या में हैं। सबसे अधिक समाचार पत्र व पत्रिकाएं हिंदी में पंजीकृत हैं, प्रकाशित होते हैं। सबसे ज्यादा प्रतियां हिंदी समाचार पत्र की छपती हैं । सबसे ज्यादा हिंदी भाषा में प्रकाशित समाचार पत्र दैनिक भास्कर के संस्करण (35) छपते हैं। इससे प्रमाणित होता है कि हिंदी हमारे देश की एकमात्र प्रमुख भाषा है । हिंदी भाषा सर्वथा वैज्ञानिक भाषा है। व्याकरणिक शुद्धता, मानकता, प्रयुक्ति विशिष्टता, व्यावसायिक सम्प्रेषणीयता, शब्दावली की एकरूपता एवं स्वीकार्यता, आधुनिकीकरण उन्मुखता आदि विभिन्न मानकों की दृष्टि से हिंदी एक समृद्ध और सम्पूर्ण भाषा है।

समृद्ध साहित्य परम्परा :

हिंदी में विपुल मात्रा में समद्ध साहित्य है । प्रेमचंद, श्री लालशुक्ल, फणीश्वर नाथ रेणु, यशपाल, जैनेन्द्र जैसे कथाकार, कबीर, तुलसी, रहीम, महादेवी वर्मा, निराला, प्रसाद और पंत जैसे महान कवियों ने हिंदी भाषा में अपना साहित्य रचा है।

वस्तुतः साहित्यकि दृष्टि से हिंदी विश्व की समृद्धतम भाषाओं में से एक है। साहित्य की सभी विधाओं में इसकी समृद्ध और उत्कृष्ट रचनाएं हैं – उपन्यास, कहानी, कविता, नाटक, निबंध, संस्मरण, हास्य–व्यंग आदि सभी विधाओं में विश्व का श्रेष्ठ साहित्य हिंदी में मौजूद है। प्रेमचंद जैसे महान कथाकार हिंदी साहित्य के पुरोधा रहे हैं, जिनकी कृतियों का विश्व की सभी प्रमुख भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। प्रेमचंद के उपन्यास गोदान के जापानी अनुवाद की 5 लाख से ज्यादा प्रतियां बिकी। प्रेमचंद की अन्य कृतियों और हिंदी के अन्य साहित्यकारों की रचनाओं की दूसरी भाषाओं में अनुवाद की लाखों प्रतियां प्रकाशित हो चुकी हैं। आज भारत में सर्वाधिक पत्र–पत्रिकाएं तथा उनके पाठक हिंदी में हैं। ज्ञान–विज्ञान और साहित्य की सर्वाधिक पुस्तकें हिंदी में लिखी और

छापी जा रही हैं । "रामचरित मानस" जैसी कालजयी कृतियां हिंदी की अनुपम निधि हैं, जो संभवतः विश्व की एक मात्र ऐसी रचना है, जिसका इस भू–मंडल पर कहीं न कहीं सदैव वाचन होता रहता है।

हिंदी का अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्यः

हिंदी भारत की ही महत्वपूर्ण भाषा नहीं है वरन् भारत से बाहर दूसरे देशों में भी हिंदी बहुत बड़े स्तर पर एक विशाल जन समुदाय द्वारा बोली और समझी जाती है। पूरे भारतीय उप महाद्वीप में अर्थात – नेपाल, पाकिस्तान,बांग्लादेश और भूटान में तो अधिकांश जनता हिंदी समझती है, मारिशस, फिजी, गुयाना, सूरीनाम, त्रिनिडाड आदि देशों में भी बहुत बड़ी संख्या में हिंदी प्रयोक्ता हैं इन देशों में हिंदी का प्रयोग बोलचाल के स्तर पर ही नहीं है वरन् भाषा प्रयोग के विभिन्न आयामों शिक्षा, वाणिज्य–व्यापार, सरकारी कामकाज, साहित्य सृजन आदि में हिंदी का व्यापक प्रयोग हो रहा है।

विश्व के अनेक विकसित देशों यथा– अमेरिका, ब्रिटेन आदि में भी हिंदी बोलने वालों की बहुत बड़ी संख्या है। हिंदी की महत्ता इससे भी सिद्ध होती है कि कुछ समय पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति ने अमेरिकी शिक्षण संस्थानों में हिंदी शिक्षण की व्यवस्था की है। ब्रिटेन व अन्य कई देशों में दूसरी व तीसरी भाषा के रूप में पहले से ही हिंदी पढ़ाई जा रही है।

इस समय यूरोप, अमेरिका और कनाडा, आस्ट्रेलिया के अधिकांश विश्वविद्यालयों में हिंदी पठन–पाठन की व्यवस्था है। विश्व के 40 देशों की 600 से ज्यादा शिक्षण संस्थानों (विश्वविद्यालयों , स्कूल) में हिंदी पढ़ाई जा रही हैं। जापान जैसे छोटे से देश में 8 विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षण की व्यवस्था है। इस देश में उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद के प्रसिद्ध उपन्यास "गोदान" के प्रो. क्योयोदोई द्वारा जापानी भाषा में किए गए अनुवाद की 5 लाख प्रतियां बिकी थीं, जो अपने आप में एक कीर्तिमान है। कोरिया के विश्वविद्यालयों में भी हिंदी में स्नातकोत्तर स्तर पर पढ़ाई होती है। रूस में 34 से अधिक शिक्षण संस्थानों में हिंदी पढ़ाई जाती है अमेरिका में 28 से अधिक संस्थाओं में हिंदी के अध्ययन की व्यवस्था की गई है। इतना ही नहीं विश्व के 40 से अधिक विदेशी मूल के विद्वान हिंदी में रचनाएं लिख रहे हैं, व्याकरण और शब्दकोश तैयार कर रहे हैं। विश्व में हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसमें हिंदी मातृभाषा न होने पर भी उच्चस्तर का सृजनात्मक लेखन करने वाले लगभग 100 से अधिक लेखक हैं।

हिंदी का स्वरूप शुरू से ही वैश्विक रहा है। आज 127 देशों में भारतीय मूल के लोग रहते हैं, जिन्हें हम अप्रवासी भारतीय करते हैं। इन देशों में अधिकांश अप्रवासी भारतीय हिंदी समझ और बोल लेते हैं। प्रवासी भारतीयों का हिंदी के प्रचार–प्रसार और विकास में बहुत बड़ा योगदान रहा है। हिंदी भाषी समुदाय का विदेशों में बड़े स्तर पर प्रवास 1834 में प्रारंभ हुआ जब उत्तर प्रदेश और बिहार से मारीशस में एक बड़ा दल मजदूरों के रूप में गया। उसके बाद 1845 में त्रिनिदाद 1860 में दक्षिण अफ्रीका, 1870 में गुयाना, 1873 में सूरीनाम और 1879 में फीजी में हिंदी भाषी भारतीयों के बड़े पैमाने पर प्रस्थान हुआ। इन प्रवासी भारतीयों ने पीढ़ी–दर–पीढ़ी हिंदी भाषा को व्यापक आयाम दिया और विश्व भाषा बनाने में अहम् भूमिका अदा की है।

हिंदी का सामर्थ्य :

हिंदी आधुनिक भारतीय भाषाओं के उदभाव काल (लगभग 1000 ई.) से मध्यदेश के निवासियों के सामाजिक संप्रेषण तथा साहित्यिक–सांस्कृतिक अभिव्यक्ति की भाषा रही है और अब भी है। हिंदी भाषा एक समर्थ एवं सम्पन्न भाषा है। यह प्रशासनिक, वैज्ञानिक, तकनीकी सभी प्रकार की उच्च कोटि की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। इसमें भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के शोध छात्र अपना शोध प्रबंध प्रस्तुत कर चुके हैं। न्याय की भाषा के रूप में अनेक उच्च न्यायालयों में इसका सामर्थ्य सिद्ध हो चुका है। दस राज्यों और संघ शासित राज्यों के शासन की भाषा, उनके विधान की भाषा के रूप में प्रयुक्ति पाकर हिंदी ने यह सिद्ध कर दिया है कि विश्व की किसी भी अंतर्राष्ट्रीय भाषा की तुलना में हिंदी भाषा कहीं अधिक समर्थ–समृद्ध एवं सम्पन्न भाषा है। भाषा किसी भी देश या समाज की अस्मिता का अंतरंग अंग होती है। यही कारण है कि प्रत्येक देश या समाज अपनी भाषा को सर्वश्रेष्ठ मानता है और इस मान्यता में अन्य सभी भाषाओं के प्रति उपेक्षा या तिरस्कार का भाव भी रहता है।

कुछ समय पूर्व गूगल्स के मुख्य कार्यपालक अधिकारी ने माना था कि विश्व इंटरनेट मार्केट में अगले पांच वर्ष में अंग्रेजी और चीनी के बाद तीसरी भाषा हिंदी होगी। इंटरनेट बाजार की प्रमुख कंपनियां इस दिशा में सक्रिय हो उठी हैं और हिंदी का बाजार हथियाने के लिए तमाम तरह के उपायों में जुट गई हैं लेकिन इसमें कोई दो राय नहीं है कि इंटरनेट पर आने वाले समय में हिंदी का ही वर्चस्व होने वाला है। काफी समय पहले "न्यूयार्क टाइम्स" के संपादकीय ने भी इस बात को स्वीकारा था कि इंटरनेट पर अंग्रेजी के बाद हिंदी का ही वर्चस्व है। इंटरनेट और कम्प्यूटर पर भाषायी वर्चस्व की 21वीं सदी की चुनौतियों का सामना करने के लिए हिंदी पूर्णतः सक्षम भाषा है। मनुष्य की सबसे मौलिक उपलब्धि उसकी भाषा है। भाषा के माध्यम से ही मनुष्य एवं भावों और विचारों की अभिव्यक्ति करता है।

आज संसार में लगभग 5000 भाषाएं और बोलियां हैं। उनमें से 1652 अकेले भारत में हैं। इनमें से 63 भाषाएं अभारतीय हैं। संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त कुल 22 भाषाएं 95 प्रतिशत लोगों द्वारा बोली जाती हैं।

हिंदी अपनी ताकत के बल पर आज प्रतिष्ठति अंग्रेजी प्रकाशन समूहों की भाषा बन रही हैं। बीबीसी, स्टार, सोनी, जीटीवी, डिस्कवरी आदि ने हिंदी को अपना लिया हैं।

राष्ट्रीय एकता की कड़ी :

भाषा केवल भावों और विचारों का सम्प्रेषण ही नहीं करती, हमें संस्कार भी देती है। भाषा केवल व्यक्ति को संस्कारवान ही नहीं बनाती वरन् पूरे राष्ट्र को संस्कारवान बनाती हैं। भाषा समाज को जोड़ती है, समाज को धारण करती है। सम्पूर्ण राष्ट्र को एकजुट करने का कार्य भाषा ही सम्पन्न करती है।

हिंदी में पूरे राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोने की अदभुत क्षमता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब भी सम्पूर्ण देश एक साथ खड़ा हुआ है तो उसके संवाद की भाषा हिंदी ही रही है। राष्ट्रीय आन्दोलन में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने हिंदी की इस ताकत को पहचाना था। इसलिए उन्होंने कहा था कि "स्वराज करोड़ों भूखे लोगों का, करोड़ों निरक्षरों का, निरक्षर महिलाओं और दलितों का हो और उनके लिए हो तो हिंदी ही एकमात्र राष्ट्रभाषा हो सकती है। हिंदी ही राष्ट्रीय एकता का वह सूत्र थी जिसने आजादी के आन्दोलन में देश की समस्त जनता को एक साथ खड़ा किया ।

वर्तमान में भी देश को एकता के सूत्र में बांधने की हिंदी की ताकत पुनः साबित हुई है जब मराठी भाषी श्री अन्ना हजारे जी के नेतृत्व में सम्पूर्ण देश में भ्रष्टाचार के विरूद्ध चलाए गए आन्दोलन में देश के प्रत्येक राज्य और क्षेत्र से लाखों की संख्या में लोग हिंदी के माध्यम से इस आन्दोलन से जुड़े। जाहिर है, हिंदी में सम्पूर्ण राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोने की असीम शक्ति है। हमें इस शक्ति को पहचानना है, इसको अधिक से अधिक समर्थ, समृद्ध और सम्पन्न बनाना है।

देवनागरी लिपि – सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपिः

संविधान में देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। देवनागरी लिपि दुनिया की सबसे अधिक वैज्ञानिक लिपि है। इसमें जैसा लिखा जाता है वैसा ही बोला जाता है। जबकि इसके विपरित अंग्रेजी में अक्षरों का उच्चारण बदलता रहता है। उदाहरण के लिए Put – पुट, But – बट में 'यू' का उच्चारण कहीं 'यू' है तो कहीं 'अ'। इसी प्रकार Knife Psychology आदि में K और P आदि का उच्चारण ही नहीं होता।

प्रायः कहा जाता है कि अंग्रेजी में 26 अक्षर हैं और हिंदी में 44। रोमन में 26 अक्षरों की सीमा के कारण अंग्रेजी के महान नाटककार बर्नार्ड शॉ ने इसे 40 अक्षरों की लिपि बनाने का सुझाव दिया था। यही नहीं रोमन के 26 अक्षरों को Capital और Small Letter दोनों को मिलाकर उसमें 52 तरह से लिखा जाता है। जापानी में कम्प्यूटर पर 256–की का प्रयोग होता है। भारतीयों ने ही जापानी भाषा का की–बोर्ड बनाकर दिया है। चीनी भाषा की भी कमोबेश यहीं स्थिति है।

आज कम्प्यूटर और सूचना प्रौद्योगिकी के युग में विश्व की सक्षम लिपि के रूप में भी देवनागरी को उपयुक्त माना जा रहा है। अमेरीका, जापान, जर्मनी में महत्वपूर्ण शोध चल रहा है। अमेरीका के प्रसिद्ध वैज्ञानिक रिक ब्रिगज ने तो यह घोषित किया है कि देवनागरी लिपि ही कम्प्यूटर की दृष्टि से आदर्श लिपि है। इसमें विश्व की किसी भाषा एवं ध्वनि का लिप्यांकन किया जा सकता हैं।

विपुल शब्द - सम्पदा :

हिंदी का शब्द भण्डार बहुत ही समृद्ध है। हिंदी में ढाई लाख से ज्यादा मूल शब्द हैं जबकि अंग्रेजी में मूल शब्दों की संख्या 10,000 बताई जाती है। मूल शब्दों के आधार पर निर्मित शब्दों की संख्या

आज हिंदी में 20 लाख से ज्यादा है। वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा निर्मित शब्दों की संख्या ही लगभग 8 लाख से अधिक है। इस प्रकार जाहिर है हिंदी शब्द भण्डार की दृष्टि भी अत्यन्त समृद्ध भाषा है। संस्कृत जैसी समद्ध भाषा से विकसित होने के कारण हिंदी में 50 लाख से अधिक शब्द निर्मित करने की क्षमता है। मौजूदा अंग्रेजी में 75 प्रतिशत से अधिक शब्द अन्य भाषाओं से आते हैं। हिंदी में शब्द निर्माण क्षमता भी अंग्रेजी से अधिक है। उदाहरण के लिए – अंग्रेजी में Jail और Prison दोनों शब्दों का अर्थ होता है – कारागार तथा प्रत्यय er का अर्थ है करने वाला किन्तु जब Jail और Prison में er प्रत्यय जोड़ते हैं तो शब्द बनते हैं – Jailer और Prisoner जो कि विपरित अर्थ देते हैं। इसी प्रकार see और look का अर्थ देखना है किन्तु जब इन्हें पदबंध में प्रयुक्त किया जाता है तो अर्थ बदल जाता है। over see – ध्यानपूर्वक देखें तथा over look – नजर अंदाज। इसी प्रकार अंग्रेजी में Butter Milk का अर्थ है – No better Milk। हिंदी में ऐसी स्थिति प्रायः नहीं है।

अध्यात्म, अंतरिक्ष, गणित, संस्कृति आदि से संबंधित शब्दावली तो हिंदी में अत्यन्त ही समृद्ध है। हिंदी ऐसी भाषा है जिसमें सूर्य के सैंकड़ों पर्याय हैं जबकि अंग्रेजी में केवल एक शब्द Sun है। इसी प्रकार चन्द्रमा के लिए भी हिंदी में अनेक पर्याय हैं। अंर्तराष्ट्रीय अंक मूलरूप से हिंदी से ही लिए गए हैं। "शून्य" ओर "दशमलव" हिंदी की ही देन है जिसके आधार पर समस्त वैज्ञानिक खोज हुई है। योग, ध्यान, प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति इत्यादि विश्व को भारत की ही देन है। विश्व के विभिन्न देशों में सैकड़ों सांसद और मंत्री भारतीय मूल के हैं एवं कुछ देशों में राष्ट्राध्यक्ष भी भारतीय मूल के हैं।

विज्ञापनों में हिंदी का वर्चस्वः

प्राइवेट और मल्टीनेशनल कंपनियां भी आज हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं में विज्ञापन अंग्रेजी की तुलना में ज्यादा दे रही हैं। टाटा जैसे व्यापारिक घरानों का हिंदी में विज्ञापन पर खर्च अंग्रेजी में विज्ञापन पर खर्च से कई गुणा ज्यादा है।

फिल्मों, टीवी चैनलों, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं की संख्या की दृष्टि से भी हिंदी अंग्रेजी की तुलना में कहीं आगे और समृद्ध है।

भाषा और संस्कृति :

भाषा और संस्कृति का गहरा संबंध होता है। हम हिंदी में अभिवादन करते हुए नमस्कार, प्रणाम और चरण स्पर्श करते हैं जबकि अंग्रेजी में Good Morning] Good Night जैसे अभिव्यक्तियों के माध्यम से Wish किया जाता है। रिश्ते–नाते की शब्दावली के आधार पर भी अंग्रेजी में बहुत Common Terms है जबकि हिंदी में Specific। उदाहरण के लिए चाचा, ताऊ, फूफा, मामा सबके लिए अंग्रेजी में Uncle शब्द है। इसी प्रकार बहनोई, साले, जेठ, देवर और साढ़ू आदि सभी के लिए केवल एक शब्द है – Brother in law। जबकि भारतीय संस्कृति में प्रत्येक संबंध का अलग और विशिष्ट महत्व है।

आत्मवत् सर्वभूतेषु, सत्यमेव जयते, अतिथि देवो भवः, सर्वे भवंतु सुखिनः, वसुधैव कुटुम्बकम् जैसी भावना भारतीय संस्कृति में मिलती है जिसकी अभिव्यक्ति हिंदी के माध्यम से सशक्त रूप में होती है।

उपसंहारः

वास्तव में व्यक्ति का आंतरिक एवं संस्कारगत व्यक्तित्व उसकी अपनी भाषा में ही व्यक्त हो सकता है। किसी भी विदेशी भाषा में से भाषा के वे रेशे झड़ जाते हैं, जो हमें अंदर से छू सकें इसलिए किसी भी देश के लिए मातृभाषा और राष्ट्रभाषा का महत्व बहुत बढ़ जाता है। भाषा का प्रश्न वस्तुतः राष्ट्रीय अस्मिता और गौरव से जुड़ा होता है। हिंदी भारत का गौरव है, राष्ट्रीय अस्मिता का प्रतीक है। मनोरंजन और समाचार उद्योग ने हिंदी को सम्प्रेषणीयता की महत्वपूर्ण भाषा के रूप में अपनाया है। हिंदी के पक्ष में एक नए आशावाद का अभ्यूदय हुआ है। सम्प्रेषणीयता, गुणवत्ता, प्रयुक्ति क्षेत्र और प्रयोक्ताओं की संख्या की दृष्टि से हिंदी आधुनिक युग की विश्व की महत्वपूर्ण भाषा है। इसका साहित्य विपुल और समृद्ध है। इसका इतिहास पुराना और स्वर्णिम रहा है। यह सांस्कृतिक एकता एवं समन्वय का सशक्त माध्यम रही है। यह हमारी राष्ट्रीयता की वाणी है।

आधुनिक युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। बेशक सूचना प्रौद्योगिकी का उदय अंग्रेजी भाषा के माध्यम से हुआ हो किन्तु सूचना प्रौद्योगिकी को पराकाष्ठा तक पहुंचाने का माध्यम हिंदी ही बनेगी।

किसी भी भाषा के अंतर्राष्ट्रीय भाषा बनने के अभिलक्षणों में प्रमुख हैं – विदेशों में व्यापक स्तर पर पठन–पाठन, साहित्य सृजन, विदेशी शैली रूप, पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन आदि । इन अभिलक्षणों के परिप्रेक्ष्य में हिंदी अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में स्थापित है। हिंदी की अंतर्राष्ट्रीय महत्ता इस बात से सिद्ध होती है कि हिंदी का प्रथम व्याकरण, हिंदी साहित्य का प्रथम इतिहास विदेशियों द्वारा लिखा गया और हिंदी का पहला सर्वेक्षण भी विदेशियों द्वारा किया गया।

हिंदी पूरे विश्व में 100 करोड़ से अधिक लोगों द्वारा समझी और बोली जाती है। इस भाषा के विकास और उन्नयन में ऐसे लोगों का विशेष योगदान रहा है, जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं थी।

हिंदी भाषा उस समुद्र जलराशि की तरह है जिसमें अनेक नदियाँ मिली हों – वासुदेवशरण अग्रवाल

डॉ हिमांशु शेखर, वैज्ञानिक जी, निदेशक (परियोजना अनुवीक्षण)
आयुध एवं समाघात अभियांत्रिकी महानिदेशालय,
(रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन)
डॉ होमी भाभा रोड, पाषाण, पुणे

देश की सुरक्षा के लिए भू–भाग चित्रण के आयाम

भूमिका

भू–भाग चित्रण (Terrain Mapping) देश के सीमा की सुरक्षा में अहम् भूमिका अदा करती है। भू–भाग की जानकारी न केवल अन्वेषण और शोध की विषय वस्तु है, बल्कि ये सेना के टुकड़ी की तैनाती (Deployment), उनके स्थान परिवर्तन, उनके आवागमन (movement), उनके रसद आपूर्ति (supply of resources), उनके हथियार की क्षमता, भूस्खलन (landslide) की संभावना, शत्रु सीमा की गतिविधियां, आदि उपलब्ध कराने में एक सशक्त माध्यम सिद्ध होती है। कहा जाता है कि द्वितीय विश्व युद्ध के समय रूस में बहुत आगे बढ़ने के बाद भी जर्मन सेना की हार का एक मुख्य कारण था दृ उनकी रूस में पड़ने वाली सर्दी से अनभिज्ञता द्य जर्मन सेना रूस में आगे बढ़ती गयी और रुसी सेना पीछे हटने के साथ साथ खाने पीने की सामग्री नष्ट करती गयी। जब सर्दी का मौसम आया, तो जर्मन सेना के पास न बचाव के लिए उचित कपडे थे, न खाने पीने का रसद उपलब्ध था और न ही उनके हथियार अपनी क्षमता का प्रदर्शन कर पाए थे। कुल मिलाकर मौसम, शत्रु क्षेत्र की जानकारी और उचित रणनीति के आभाव में जर्मन सेना नष्ट होती गयी द्य तकनीकी प्रगति ने सैन्य शक्ति को सुदृढ़ करने के लिए भू–भाग चित्रण को सेना में शान्ति और तनाव के क्षणों का एक अभिन्न अंग बना दिया है द्य सिकंदर और पोरस की लड़ाई में भी कहा जाता है कि युद्ध क्षेत्र में वर्षा होने के कारण दलदल में फंसकर पोरस के हाथियों ने अपनी सेना का ही ज्यादा नुकसान किया था । वैसे सिकंदर के कैटापुल्ट और बैलिस्ता नामक हथियारों ने भी सिकंदर की जीत में मुख्य भूमिका अदा की थी, पर युद्ध क्षेत्र के अनुरूप अपनी सेना को न ढाल पाने की विवशता ने भी पोरस को हार की ओर अग्रसर किया था इसलिए भू–भाग संबंधी जानकारी सेना के लिए आधुनिक युग में बहुत जरुरी है।

भू–भाग चित्रण का परिचय

भू–भाग चित्रण वास्तव में पृथ्वी की सतह का खाका होता है। इसमें कृत्रिम उपग्रहों (Artificial Satellite) से प्राप्त चित्रों को धरती की सतह के उतार चढ़ाव को दर्शाने के लिए उपयोग किया जाता है। इसमें आकलन का उपयोग होता है, संगणकों (Computer) का उपयोग होता है, अनुरूपण, प्रारूपण (Modelling and Simulation) का प्रयोग होता है, और निष्कर्ष रूप में एक

मानचित्र (map) का निर्माण होता है, जो भू–भाग पर विचरण (movement) करने में एक सामरिक वर्चस्व (military dominance) देने का सामर्थ्य रखता है। ऐसा नहीं है कि भू–भाग चित्रण का प्रयोग केवल देश की सुरक्षा के लिए ही किया जाता है। जनसाधारण भू–भाग चित्रण का प्रयोग गूगल मैप के माध्यम से करता आया है। रक्षा क्षेत्र में इसके अनुप्रयोगों में सिर्फ कुछ अलग पहलू जुड़ जाते हैं भू–भाग चित्रण के लिए भू–भाग का कृत्रिम उपग्रह से लिया गया चित्र मूलभूत आवश्यकता होती है। ये चित्र सामान्यतः दो विमा (Dimension) दर्शाते हैं, पर सेना के लिए आवश्यकता त्रिविमीय चित्र की होती है। इसके लिए चित्रों को लेने के समय विशेष उपकरणों की आवश्यकता होती है। साथ ही चित्र लेने के बाद सभी चित्रों को मिला कर एक समग्र विस्तृत जानकारी देने वाली व्यवस्था कायम की जाती है। सेना की आवश्यकताओं में केवल सतह की जानकारी ही नहीं बल्कि भू–पटल का उर्ध्वाधर चित्रण, विचरण हेतु उपयुक्त पथ निर्माण, गाडियों के आवागमन के सुविधाजनक मार्ग आदि की भी भूमिका रहती है। कुल मिलाकर भू–भाग चित्रण का प्रारम्भ तो असैनिक क्षेत्रो में पाया जाता है, पर सैन्य क्षेत्रो में इसकी जरुरत उन्नत तकनीकी, आकलन विशेषज्ञता, तथा ज्ञान अर्जन की नई दिशाओं का समावेश चाहती है।

भू–भाग चित्रण के आयाम

सैन्य क्षेत्र में भू–भाग चित्रण केवल धरातल के उतार चढाव का चित्रण ही नहीं होता, बल्कि उसके साथ साथ सेना की तैनाती का खाका भी होता है। यह सीमा के पार शत्रु क्षेत्र में सेना की गतिविधियों की जानकारी भी प्रत्यक्ष समय (real time) में बिना समय गंवाए देता है। इन महत्त्वपूर्ण सूचनाओं से अपनी सेना के विचरण पर निर्णय लिया जाता है। भू–भाग चित्रण के सैन्य आयामों को एक चित्र में दर्शाया गया है। पहला पहलू होता है धरातल चित्रण का इस पहलू का उपयोग जनसाधारण ज्यादा करता है और सैन्य क्षेत्र में इसतरह के अनुप्रयोग किसी नई सूचना या तकनीकी की दरकार नहीं रखते है। उपग्रहों से प्राप्त चित्रों से जो भौगोलिक मानचित्र (Topographical map) प्राप्त होता है, उसका प्रयोग सैन्य और असैन्य क्षेत्र एक समान रूप से करते है। इसतरह के नक्शों में धरातल का खाका, भवन और सड़को की जानकारी, पैमाने (scale) की आधार पर अतिरिक्त जानकारी भी उपलब्ध रहती है। सैन्य सुविधा के लिए कुछ विशेष व्यवस्था की जाती है, जिससे स्थायी मानचित्र की जगह वर्तमान मानचित्र (Current Map) उपलब्ध हो। साथ ही सेना को सीमा पर के धरातल की जानकारी में रूचि होती है, नक्सल प्रभावित जंगलो के धरातल का ज्ञान आवश्यक होता है। सेना की इन विशेष जरूरतों की आपूर्ति करने में भू–भाग चित्रण को सक्षम होना पड़ता है।

भू–भाग चित्रण का दूसरा पक्ष होता है – सैन्य टुकड़ियों के आवागमन का सेना के बटालियन और ट्रुप सीमा के हालात पर नजर रखते हुए सदा चलते रहते है। हरेक बटालियन के पास अपनी गाड़ियां होती है, अपना टेंट होता है, अपने हथियार होते है, अपनी रसद आपूर्ति्त व्यवस्था होती है। उनको एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने का निर्देश मुख्यालय से मिलता है, जो सीमा से दूर बैठ कर तय करते है। उनको भी भू–भाग चित्रण का सहारा लेना पड़ता हैं।सेना के लिए भू–भाग चित्रण में वाहन आवागमन (Vehicular Movement) की आवश्यकता केवल चित्रण ही नहीं बल्कि सेना का उन इलाकों में जाना भी सुनिश्चित करना है, जहां सड़कें नहीं है, यातायात का साधन और सुविधा नहीं है। ऐसी अवस्था में यह आवश्यक है कि जमीन की भारवाहक क्षमता

(Load bearing capacity) का ज्ञान हो, तथा यातायात योग्य भू–भाग का ज्ञान हो। ये जानकारी कृत्रिम उपग्रहों से ज्यादा, मृदा परीक्षण एवं मिटटी के नमूने लेकर सुनिश्चित किया जाता है। कुल मिलाकर आवागमन के लिए सेना को अलग प्रकार की जानकारी जरुरी होती है, जिसको विशेष रूप से उपलब्ध कराया जाता हैं।

इस तरह के स्थान पर जाकर धरती के परीक्षण एवं मूल्यांकन करने की श्रृंखला में सेना की अगली आवश्यकता होती है, भूस्खलन संभावनाओं का आकलन एवं पूर्वानुमान, भूस्खलन की संभावना पहाड़ी इलाकों में ज्यादातर बनी रहती है। इसके पूर्वानुमान के लिए भू–भाग के आकार, प्रारूप, आकृति, विस्तार के साथ साथ सहारा (Support) देने वाले भागों और ढाचों का अध्ययन भी आवश्यक हो जाता है। भूस्खलन के बाद भू–भाग का आकार बदल जाता है और कई बार आवागमन, और गतिविधियों की नई रणनीति बनानी पड़ती है। भूस्खलन की जानकारी सेना के लिए एक नई जरुरत है, जो असैनिक क्षेत्रो में उतनी आवश्यक नहीं हैं।सैन्य सहायक निर्माण में भी भू–भाग अध्ययन महत्त्वपूर्ण हो जाता है। भवन निर्माण, सड़क निर्माण, पुल निर्माण आदि के लिए भू–भाग का अध्ययन सेना की आवश्यकता होती है। पहाड़ी इलाकों में सड़क, सुरंग और पुल निर्माण सामरिक दृष्टि से आवश्यक हैं। भू–भाग शोध इस क्षेत्र में आर्थिक रूप से अद्यतन तथा सस्ता विकल्प उपलब्ध करा सकता हैं। सेना को भू–भाग संबंधी, सामान्य ही नहीं, बल्कि सतर्कता संबंधी जानकारियाँ भी आवश्यक होती है। इसमें पडोसी देश की सीमा पर होने वाली गतिविधियों का आकलन तथा अन्वेषण आवश्यक हो जाता है। सीमा पर की गई हरेक गतिविधि को सीमा विस्तार के प्रावधानों से जोड़ा जाता है। इसलिए, दूसरे देश की सीमा में ताक झाँक करने के लिए भी भू–भाग शोध का सहारा लिया जाता है। देश के लिए जरुरी सैन्य खुफिया जानकारी (Intelligence Information) के लिए भू–भाग शोध एक सशक्त विषय वस्तु है।

उपसंहार

कुल मिलाकर भू–भाग शोध सेना की सूचना और निर्णय लेने की क्षमता में अभूतपूर्व वृद्धि करता है। स्पष्ट है कि आधुनिक समय सूचना, संगणक और अंतरजाल (internet) का है। भू–भाग शोध भी इनका सहारा लेकर अपनी सेना, अपने मित्र देशो की सेना की सहायता ही नहीं करता, बल्कि अन्य देशों की सीमा के अंदरूनी भू–भाग की जानकारी भी उपलब्ध कराता है।इससे सामरिक दृष्टि से संपन्नता सुनिश्चित की जा सकती है।

लेखक परिचय

डॉ हिमांशु शेखर एक वरिष्ठ वैज्ञानिक हैं, एक अभियंता हैं, प्राक्षेपिकी एवं संरचनात्मक दृढ़ता के विशेषज्ञ हैं, प्रारूपण और संरूपण के अच्छे जानकार हैं, युवा वैज्ञानिक पुरस्कार से सम्मानित हैं, गणित में गहरी अभिरुचि रखते हैं, ज्ञान वितरण में रूचि रखते हैं, एक प्रख्यात हिंदी प्रेमी हैं, हिंदी में 12 पुस्तकों के लेखक हैं, एक ई–पत्रिका का संपादन भी कर रहे हैं, राजभाषा पुस्तक पुरस्कार से सम्मानित हैं, हिंदी में कवितायेँ और तकनीकी लेखन भी करते हैं, रक्षा अनुसंधान में रूचि रखते हैं, IIT कानपुर और MIT मुजफ्फरपुर के विद्यार्थी रहें हैं, बैडमिन्टन खेलते है।

हिन्दी का भविष्य उज्ज्वल है, इसमें कोई संदेह नहीं–अनंत गोपाल शेवड़े

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा (3)3 के अंतर्गत अनिवार्य रुप से द्विभाषी जारी किए जाने वाले कागजात		
1	सामान्य आदेश	General Orders
2	संकल्प	Resolution
3	परिपत्र	Circulars
4	नियम	Rules
5	प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन	Administrative or other reports
6	प्रेस विज्ञप्तियां	Press Release/Communiques
7	संविदाएं	Contracts
8	करार	Agreements
9	अनुज्ञप्तियां	Licences
10	निविदा प्रारुप	Tender Forms
11	अनुज्ञा पत्र	Permits
12	निविदा सूचनाएं	Tender Notices
13	अधिसूचनाएं	Notifications
14	संसद के समक्ष् रखे जाने वाले प्रतिवेदन तथा कागज पत्र	Reports and documents to be laid before the Parliament

लाखों की संख्या में छात्रों की उस पलटन से क्या लाभ जिनमें अंग्रेजी में एक प्रार्थनापत्र लिखने की भी क्षमता नहीं है – कंक

NATIONAL COUNCIL FOR CEMENT AND BUILDING MATERIALS

NCB

न हि ज्ञानेन सदृशं

राष्ट्रीय सीमेंट एवं भवन सामग्री परिषद्

(भारत सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के प्रशासनिक शासनाधीन)
34 कि.मी. स्टोन, दिल्ली–मथुरा रोड (एन.एच.–2), बल्लबगढ़–121 004, हरियाणा, भारत
दूरभाष : +91-129-2242525, 2242051 ई–मेल : nccbm@ncbindia.com

हैदराबाद इकाई

एनसीबी भवन, ओल्ड बॉम्बे मार्ग, गाछीबावली
हैदराबाद–500 008, (तेलंगाना)

दूरभाष : +91-40-23180400, 23180426
फ़ैक्स : +91-40-23000343, 23006739
ई–मेल : uicncbh@ncbindia.com

अहमदाबाद इकाई

समीत बंगलोस, प्लानेट हाउस के पीछे (पीएच–2)
शुकन शुभ–लाभ अपार्टमेंट के सामने, जज
बंगलोस मार्ग
बोडकदेव, अहमदाबाद–380 054, (गुजरात)

दूरभाष : +91-79-26855840
फ़ैक्स : +91-79-40305841
ई–मेल : uicncba@ncbindia.com

एनसीबी भुवनेश्वर - परियोजना कार्यालय

प्लॉट न. 145, ज़ोन–बी, शेड न. 4
आईडीसीओ सेंट्रल स्टोर
मानेस्वर औद्योगिक एस्टेट
भुवनेश्वर -751 010, (ओडिशा)

दूरभाष : +91-9010325172
ई–मेल : ncbodisha@gmail.com
uicncbbh@ncbindia.com

आत्म निर्भर भारत का युग,
हर भारतवासी के लिए
नूतन प्रण भी होगा,
नूतन पर्व भी होगा ।
अब एक नई प्राणशक्ति
नई संकल्पशक्ति
के साथ
हमें
आगे बढ़ना है ।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी

हमारा संकल्प

आत्मनिर्भर भारत

हिन्दी कार्यान्वन समिति

राष्ट्रीय सीमेंट एवं भवन सामग्री परिषद्

(भारत के वणिज्य एंव उघोग मंत्रालय, भारत सरकार के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन)

34 कि. मी. स्टोन , दिल्ली - मथुरा रोड (एनएच -2), बल्लबगढ़-121 004, हरियाणा